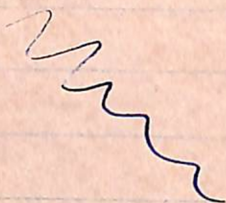





apollo



100



In continuation of Book I.
Copy Book no II.

—vv—

योग वासिष्ठ सार.
Yogavasishtha Sara.
with
Translations
in
1) Hindi
2) Kashmiri.
and 3) English.

—vvv—

W. Sadoo
29.11.73.

२३)

English :-

It is only on our admission of the fact, that this body of ours, is nothing more than a a log of wood or a lump of earth, which enables us to understand the nature of the Supreme Lord — परमात्मा ।

१३) एतावतैव देवेशः परमात्माऽवगम्यते ।
काष्ठ-लोष्ठ-समत्वेन देहो यत् अवगम्यते ॥

हिन्दी

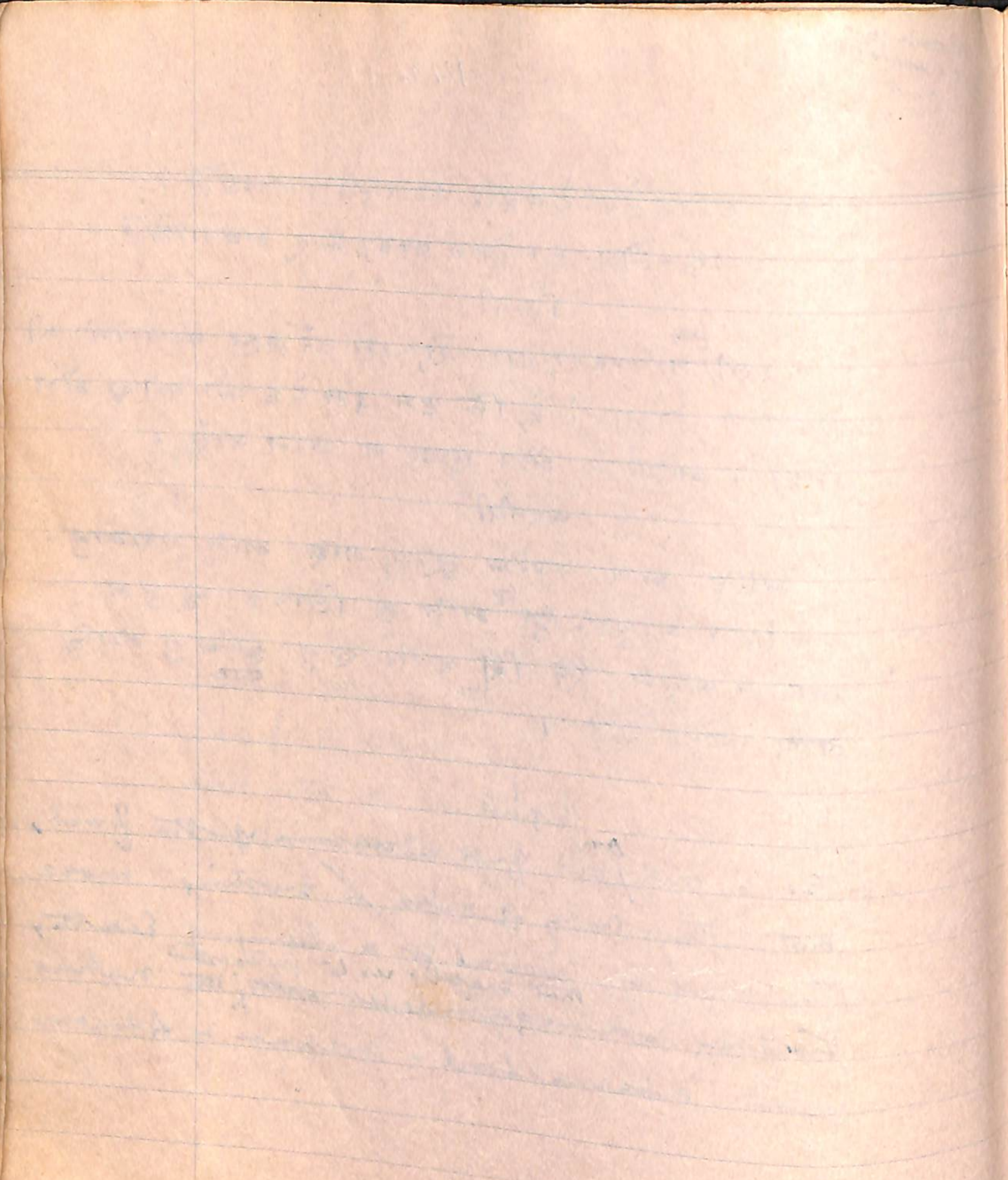
इसी एक साधारण बात से, उस परब्रह्म परमात्मा की पहचान हो जाती है, कि हम इस देह को काष्ठ और मिट्टी के अतिरिक्त और कुछ न जान पाएं ।

कश्मीरी

यीत्यि अक क्वथि सूत्य, गछि अमि भगवानु-सुन्द स्वरूप मालुम, ज़ि अमि छु सिरिफ यूत्य ख्याल थवुन ज़ि यि शरीर छुनु काठ तु म्यच़ि बगैर बयि केंह ।

English:

It is only on our full admission of the fact, that this body of ours, is nothing more than a log of wood or a lump of Earth, that enables us to understand ~~That only will acquaint you with~~ the nature of the supreme Lord – Brahman or Atman.



(२४) अहो नु चित्रं यत् सत्यं ब्रह्म तत् विस्मृतं नृणाम्
यदसत्यं अविद्याख्यं तत् पुरः परिकल्पते ॥

हिन्दी

आश्चर्य है कि वह ब्रह्म, जो सत्य है, उस को लोग भूल गए हैं, और जो असत्य है, जिस को लोग अविद्या के नाम से भी जानते हैं, उसे लोग सत्य समझने लगे हैं।

कश्मीरी — कोताह आश्चर छु, ज़ि युस ब्रह्म पुज़ छु, सु छुख लूकव मॅशरोविथ; युस यि असत्य ज़गत् छु, यथ अविद्या ति नाव छु, तथ ह्यॅच़ आसि मूर्खव थपुथफ करुन्य।

English :-

What a wonder! The only Truth, which is Brahman, is being neglected by the people, and the Untruth, which is called अविद्या also, is being ~~given~~ brought ~~importance~~ into forefront, and as such, is being allowed to grow into magnitude unnecessarily.

27) English:-

Yet there is another wonder (which we confront in our daily life) — we have neglected to attain that Summum Bonum, the Supreme Good, which alone should be our goal. On the other hand, we adhere ~~ourselves~~ to अविद्या i.e. to a wrong notion called 'मम इदं' (this is mine), which (notion) gathers strength day by day.

X

२४) अन्यत् चित्रं यत् परमं ब्रह्म, तत् विस्मृतं नृणाम् ॥
यत् 'मम-इदं' अविद्याख्यं तत् पुरः प्रबलायते ॥

हिन्दी।

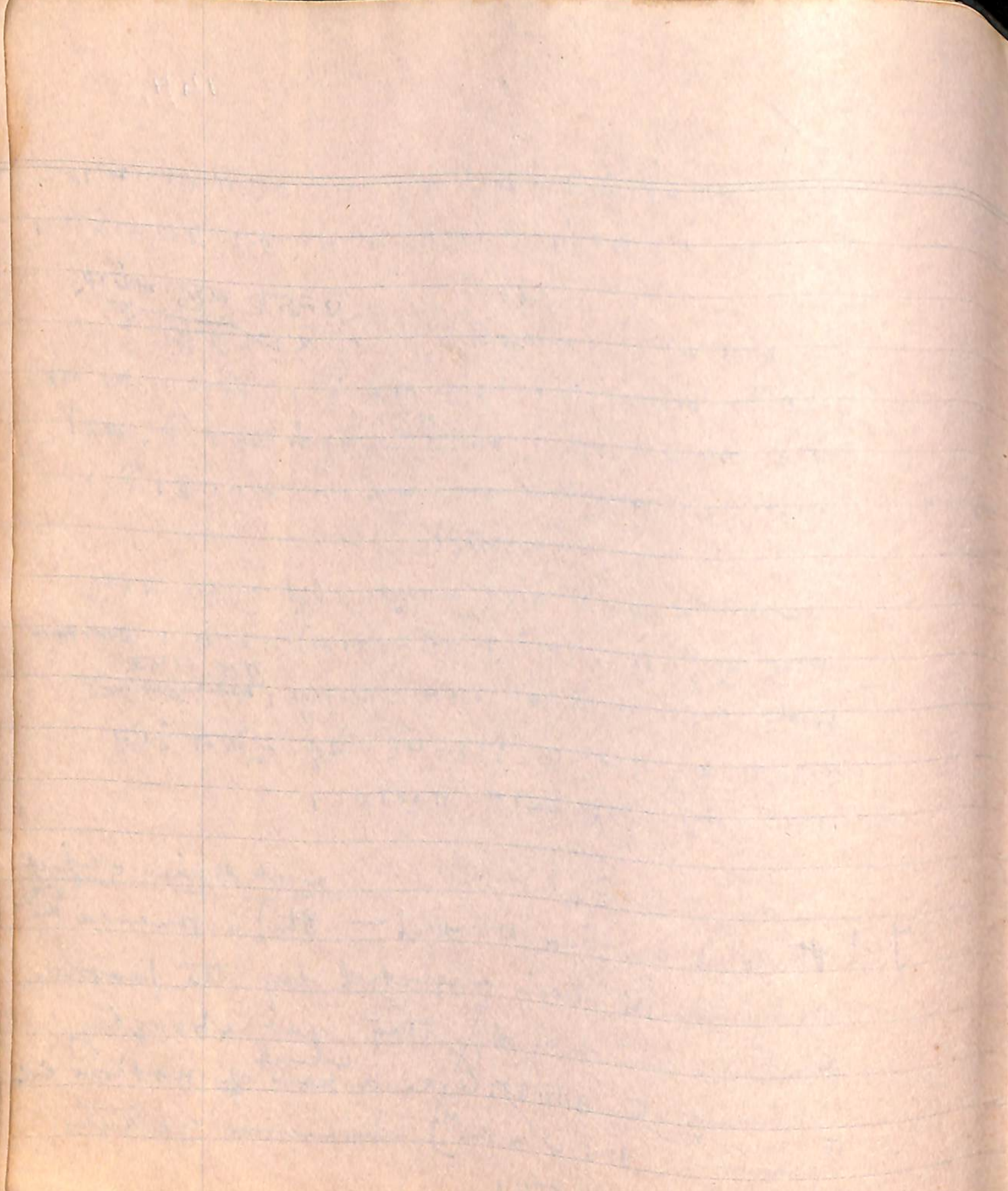
और भी एक आश्चर्य है, जो ~~परम~~ उत्कृष्ट वस्तु अर्थात् ब्रह्म है, उस को अज्ञानी लोग भूल बैठे हैं। और जो यह "मेरा यह है" वाला ~~अविद्यारूप~~ झूठा संकल्प है, वही लोगों की नज़रों में ज़ोर पकड़ता जा रहा है।

कश्मीरी

बेयि ति छु यि अख आश्चर, ज़ि युस परम ब्रह्म छु, सु म'श्राेव अमि अज्ञानियव। ~~बेयि युस~~ "यि छु म्योन" अमि प्रकारुक ~~अविद्यारूप~~ युस अपुज़ संकल्प छु, सुय छु दोह-पत-दोह लूकन हंज़ि नज़रि मंज़ ज़ोर रटान गछान।

English :-

Yet ~~there~~ there is another wonder:— ~~The~~ most desired object i.e. the Supreme Brahman, is being neglected by the people. On the other hand, they get strongly inclined to अविद्या (i.e. a ~~kind~~ wrong ~~of~~ notion i.e. to say ~~which is~~ that "this is mine") ~~which also~~ gathers strength day by day.



२६) सर्वं ब्रह्मेति यस्यान्तर् भावना, सा विमुक्तिदा।
भेदबुद्धिरविद्येयं सर्वथा तां परित्यज ॥

हिन्दी

जिस के मन में – 'सर्वं ब्रह्म' (यह सारा/जगत ब्रह्म का ही रूप है – विलास है) – इस प्रकार की भावना हो, वह/उस को भावना अवश्य मुक्ति प्रदान करेगी। यह जो अविद्या है, उस को, तुम, ~~भेद बुद्धि समझते हुए~~, सब प्रकार से/ छोड़ने की कोशिश करो॥

(भेद बुद्धि पैदा करने वाली)

कश्मीरी।

येम्य सॊन्दिस मनस मंज़ यि भावना आसि, ज़ि यि सारय जगत् छु ब्रह्म-सुन्दुय स्वरूप, स्वय भावना छस तमिस मुक्ति दिवान। स्वद्य यि/भेद बुद्धि उत्पन्न करन वाजेन्य अविद्या छि, सु ~~वाज़े~~ ~~समझिथ भेद-बुद्धि, सु~~, हर प्रकार् त्रा'विथ ~~कोशिश कर्न्य~~ छुनुन्य।

"That, 'all this is Brahman' – ~~this~~ Such unwavering conviction in us, will bring about our salvation. On the other hand, the अविद्या (ignorance) causing dualistic notion in us, ~~it~~ should, ~~therefore~~, be shunned, in every respect.

8) If you, (who are really of the nature ~~of Brahman~~), succeed in disassociating your body from jivatman, (and after having done so), stay/for a little while for rest, ~~there~~ on the plane of consciousness (चित्), ~~for a few moments~~, then you will instantly begin to feel that you have grasped ~~found out~~ the real happiness & that besides being ~~you are~~ composed, you ~~will~~ feel will see yourself ~~and~~ /released from the bondage ~~of world~~ life.

8) If you (who are really of the nature of Brahman) succeed in disassociating your body from Jivatman, (and after your having succeeded therein) you stay for a while for rest in consciousness (चित्), Then & ~~There & then~~ you will begin to realise that you have grasped the/ sweet of the highest felicity and besides having become composed, you have found ~~will find~~ your self released from the bondage of life.

X Chapter VIII.

आत्मार्चन — the propitiation of Atman). 146

वसिष्ठ उवाच — Vasishtha says:-

1) यदि देहं पृथक्-कृत्य चिति विश्रम्य तिष्ठसि।
अधुनैव सुखी शान्तो मुक्तबन्धो भविष्यसि॥

हिन्दी

यदि देह का विचार छोड़कर ~~को अलग करोगे~~, अपने चित्-स्वरूप आत्मा में प्रवेश करके, वहां, कुछ क्षण विश्राम करोगे, तो उसी क्षण, तुम्हें यह महसूस होगा, कि तुम्हें अपूर्व सुख-प्राप्ति प्राप्त होगई है और तुम संसार के बन्धनों से छूट गए हो॥

कश्मीरी

यदि, तुसि शरीर जीवात्मा ~~आत्मास~~ निश्चि अलग कॅडिव, पत पननिस चैतन्यरूपस मंज़ प्रवेश कॅरिथ, तति, केंह कालस आराम करून रॅटु ठहरख, त्यलि, तमी क्षणु सपदी चेह यि मालूम कि चेह छुय आव अपूर्व सुख ~~तु प्राप्ति~~ प्राप्त सपुद्मुत तु तॅमि सुत्य चेह संसारकेन पाशव निश्चि ~~...~~ तु आज़ाद गोमुत।

(पान मंदिव्य)

1) If you, who are of the nature of Atman, succeed in disassociating your body from जीवात्मा ~~चित् (consciousness)~~ and after that ~~and there~~ stay for some moments on the plane of consciousness ~~to take rest~~, then you will instantly begin to feel that you have found out instantaneous happiness & that you are composed and released from bondage.

2)

Having realised that inspiring Power, inherent within you, which helps you to understand the nature of this world, you may try to turn your mind inwards under a yogic exercise.

Then you are sure to see clearly yourself flooded all over, with Divine Effulgence.

2) येनेदं वेत्सि तत् ज्ञात्वा कुरु प्रत्यङ्-मुखं मनः ।
तत: प्रकाशरूपत्वं द्रक्ष्यसि स्फुटं आत्मन: ॥

हिन्दी

जिस की प्रेरणा से तुम इस जगत् को जान सकते हो, उसी को पहचानने के लिए ~~कर~~ अपने मन को अन्तर्मुख करो, फिर तुम अपनी आत्मा को प्रकाशरूप ~~मय~~ देख पाओगे ।

कश्मीरी

यँम्य सुँज़ प्रेरणायि किन्य ~~प्रेरित हुयिथ~~, छुख चु यि ज़गत् पहचानान, सुय पहचानुन ठीक चोठिन ~~तु पनु कर~~ पनुन मन अन्तर्मुख कारिथ तमी कारण छुख अद्‌ चु पनुन पान ~~प्रकाशरूप किन्य~~ प्रकाश-पाठ्य यीतरुन तु चमकुवुन ।

* Try to know that internal ~~force~~ power which makes you to perceive this world. ~~After having known that~~ To realise that you should turn your mind ~~inside~~ inward. Then you will clearly see your self radiating with divine light.

3) येन शब्दं रसं रूपं गन्धं जानासि राघव !
तं आत्मानं परं ब्रह्म जानीहि परमेश्वरम् ॥

हिन्दी

जिस आत्मदेव की प्रेरणा से तुम, रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श को जान सकते हो, उसी को ब्रह्म और परमेश्वर ~~से अभिन्न~~ समझ लो।

कश्मीरी

य'मिस आत्मदेव-सं'ज़ि प्रेरणायि सुत्य चु छुख ज़ॉनिथ ह्यकान शब्द, स्पर्श, रस, रूप तु गन्ध, सुय आत्मा, ज़ानुन ब्रह्मरूप तु परमेश्वर ॥

English

O Rāghava! ~~the~~ Atman, with whose helps ~~that makes causes~~ you ~~to~~ to understand sound, touch, taste, form and smell, know ~~it~~ Him as the Supreme Brahman or the परमेश्वर, the Great Lord of the Universe.

γ) The Supreme Power, wherein the totality of the Padarthas sinks & disappears and whereby, O Rāma!, ~~they~~ it comes to manifestation, know That as the Paramatman, of the very nature of your own self.

४) यत्र भावा विलीयन्ते विस्पन्दन्ते च येन वै।
तमेवात्मानं आत्मनोरूपं जानीहि राघव ॥

हिन्दी

जिस आत्मरूप में यह पदार्थ विलीन होजाते हैं और जिस के द्वारा यह स्पन्दन को प्राप्त होते हैं, उसी को, हे राम, परमात्मा का रूप जान लो।

कश्मीरी

यथ ~~[illegible]~~ आत्म रूपस मंज़, यिम सा'री पदार्थ म'लिथ गछ़ान छि, त्यथ य'मिकि बल-सुत्य, छि यिम सा'री ~~सा'री पदार्थ~~, हरकथ क'रिथ हावान; हे रामु! ~~[illegible]~~ सुय ज़ा'नुन ~~[illegible]~~ परमात्म ~~[illegible]~~ ॥
तु परमात्मा, सुय चोनुय रूप छु।

The Supreme Power, wherein the totality of पदार्थs sinks and disappears, and whereby ~~they~~ come to manifestation ~~existence~~, know ~~it~~ that, O Raghava, as the Paramatman ~~Atman, as your very self~~ of the very ~~nature~~ form of your Ātman ~~Paramatman~~.

५) यत् यत् ज्ञेयं इदं तत्त्वं
नेति संत्यज्य युक्तिभिः ।
क्रमावशिष्टे चिन्मात्रे सोऽहमस्मि सोऽस्मीति भावय ॥

हिन्दी

५) इस संसार में जो कुछ भी ज्ञेय पदार्थ हैं, उन सब को तर्कद्वारा, क्रमपूर्वक, अनात्मरूप प्रमाणित करते हुए, अन्त में, जिस किसी अवशिष्ट पदार्थ पर आकर, ~~आगे~~ किसी उस को अनात्मरूप सिद्ध नहीं कर पाओगे, तो उसी को चिन्मात्र समझ लो, और 'मैं वही हूं' और 'मैं वही हूं' यही दृढ़ भावना रखो ।

कश्मीरी

यथ संसारस मंज़, यिम सारी ज्ञेय पदार्थ छि, तिमन सारिनुय, तर्कि किन, क्रमपूर्वक अनात्मरूप सिद्ध करान करान, अन्तस प्यठ, यथ अवशिष्ट पदार्थस प्यठ वातिथ, तथ छिन अरिथ अनात्मरूप सिद्ध करिथ ह्यकान, सुय गछि समझुन चिन्मात्र; तथ्य प्यठ गछि दृढ़ भावना थावुन्य ज़ि 'बह छुस सी' बह छुस यहोय चिन्मात्र

English:-

After hammering out, by cogent reasoning the Un-Atmic nature of the worldly objects, and, therefore, when you conclude to discard them one by one, but in this process of discarding when you arrive at that final object which you hesitate to discard, that is the 'chinmatra': stick to it & say: I am this, I am this chinmātra alone.

६) ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राद्याः यत् यत् कुर्वन्ति संविदः।
तदऽहं चिद्वपुः सर्वं करोमीत्येव भावय ॥

हिन्दी

निश्चयपूर्वक मान लो
तुम यह) ~~निश्चय करो~~ कि मैं केवल संवित्-स्वरूप हूं। और इसी दृढ़भावना से सन्नद्ध हो कर यही ~~सोच~~ मान लो कि मैं ही वह सब कुछ करता हूं जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र आदि कर रहे हैं।

कश्मीरी

चु मानुन पनुन पान केवल संवित्-स्वरूप; व्यमि सत्र, यहोय निश्चय ज़ि बह छुस तीती शेरुय करान यि यि ब्रह्मा, विष्णु, शिव तु इन्द्र आदि र करान छि।

may
/You be convinced of the fact, that you constitute pure consciousness alone, and you are capable of performing all those functions, which Brahmā, Vishnu, Shiva, Indra etc. etc. execute in the Universe.

But
This p
of disc
when
reach
pinna

English:-

b) As knowledge, knower, and the knowable are all interlinked together and as such they cannot maintain their separate existence, it is, therefore, concluded that duality has ~~not~~ no substantial standing whatsoever.

७) ज्ञानं न भवतो भिन्नं ज्ञेयं ज्ञानात् पृथक् नहि ।
अतो नान्यतरत् किंचित् तस्मात् भेदो न विद्यते ॥

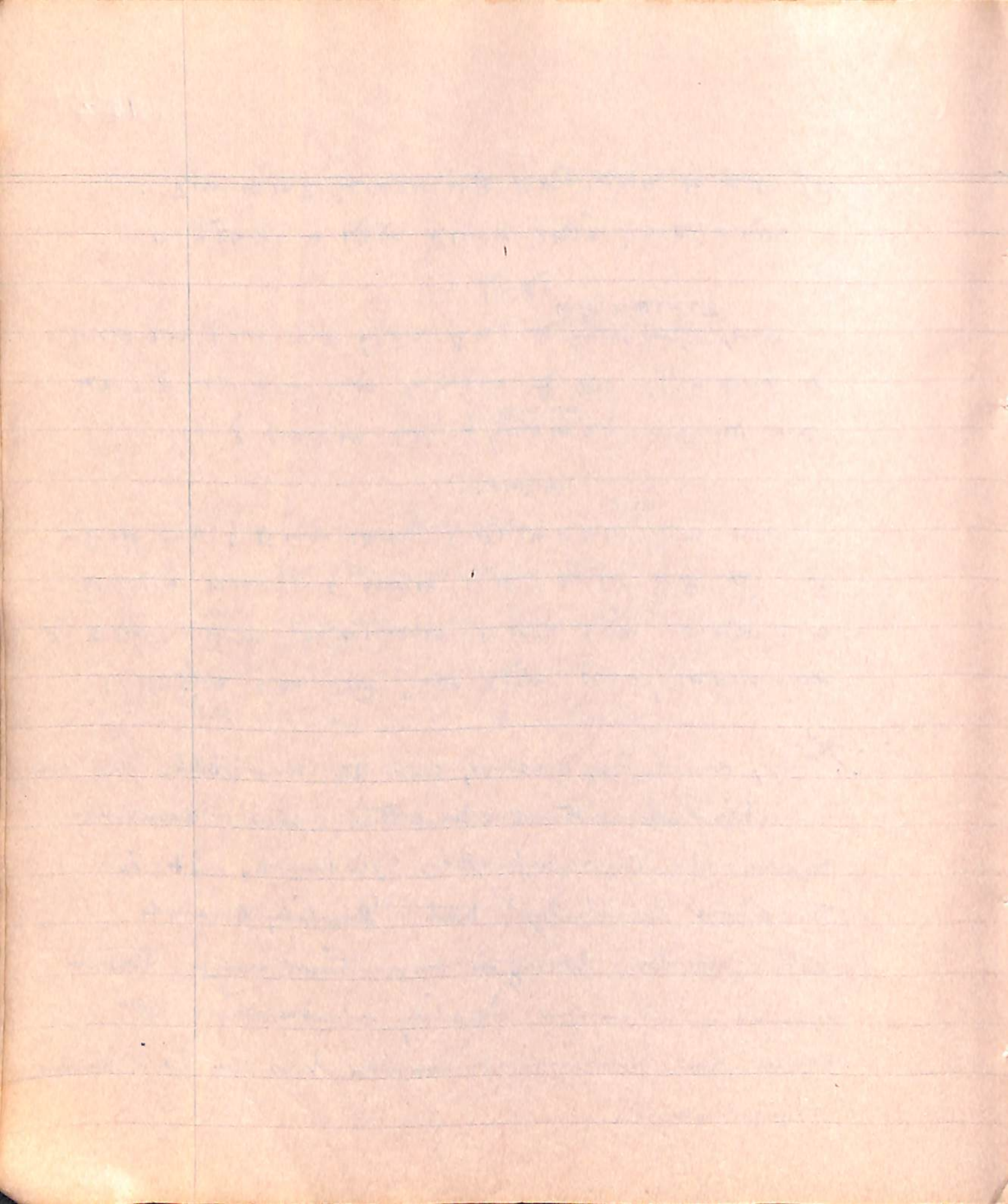
हिन्दी

ज्ञान, ~~तुम्हारे स्वरूप~~ ज्ञातारूप तुम से भिन्न नहीं; ज्ञेय जो है, वह ज्ञान से पृथक् नहीं; इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस लिए जो कुछ भेद भावना का भाव है वह असत्य है ॥

कश्मीरी

ज़ान छुह् /ज़ानन वा'लिस निश्चि भिन्न । यि ज़ानुन छु, सु छुह् ज़ा'न्य निश्चि अलग । यिमव अलावु छु नु बेयि कांह चीज़ । अमि किन्य छुह् कांह ति भेद-भावना, आसि कांह छुह, सु छुह अपुज़ ।

∴ As, Knowledge, Knower, and the knowable are all interlinked with one another and cannot maintain their seperate existance. It is therefore concluded that ~~Duality cannot sustain itself in our thinking. There is no room for~~ Duality ~~whatsoever to come in~~ ~~does not exist~~ has no Existence. whatsoever.



८) अहं सर्वं इदं विश्वं परमात्माऽहं अव्ययः ।
न भूतं अस्ति नो भावि तस्मात् भेदो न वास्तवः ॥

हिन्दी

यह सारा विश्व मेरा ही आत्मरूप है । मैं अनश्वर परमात्मा हूं । न मेरे लिए अतीत या भविष्य है । अतः यह सारी भेद [भावना] मिथ्या है ।

कश्मीरी ।

यि तोरुय संसार छु म्योनुय आत्म-रूप ।
बय छुस परमात्मा, नित्य तु सनातन ।
भूत, भविष्यत् तु वर्तमानु [क असरं] ति छु नु म्येह कांह ।
अमि किन्य, युस यि भेद भासान छु, सु छु
सरासर भ्रम तु मिथ्या ।

I constitute all this Universe. I am of the nature of Supreme Lord, Eternal & undecaying. Past, present and future do not concern me. So this Duality has no real standing whatsoever.

५) एकं ब्रह्म चिदाकारं सर्वात्मकं अखण्डितम् ।
निष्कम्पं भूरि वाऽशेषं - इति भावय यत्नतः ॥

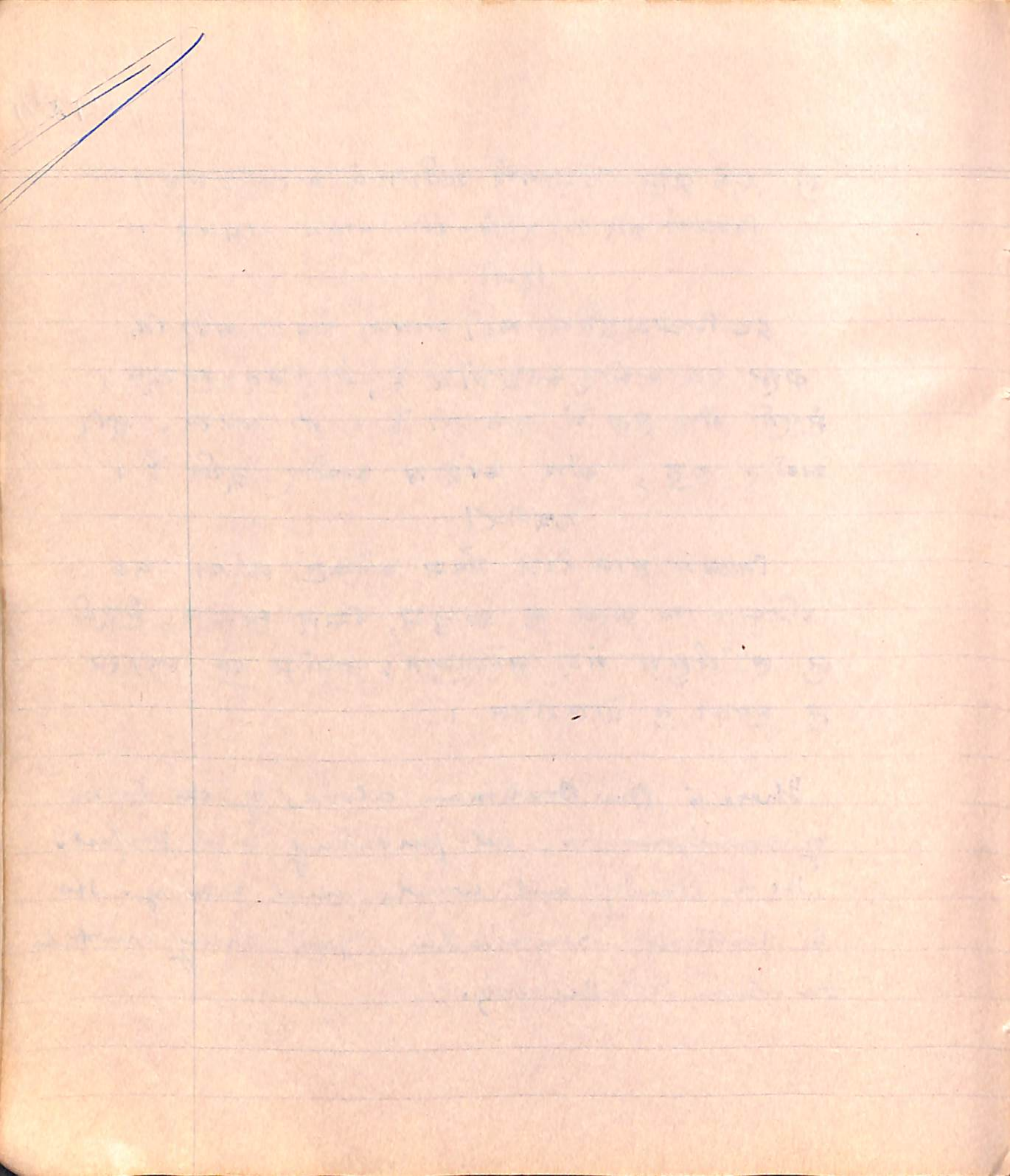
हिन्दी

दृढ निश्चयपूर्वक यही भावना धारण करो कि ब्रह्म एक अर्थात् अद्वितीय है, जो चित्-स्वरूप, संपूर्ण और सब में समाया है। जो अटल, भूरि अर्थात् बहु, और अशेष अर्थात् पूर्ण है।

कश्मीरी

निश्चय सान सोज़ यंत्य भावन करिथ ध्यान दरिथ - कि ब्रह्म छु कुनुय, चित्-स्वरूप, संपूर्ण तु सारिंय्सुय मंज़ समोमुत, यियि छु अटल तु स्यठा तु शेषरहित ।

There is One Brahman alone, of the form of consciousness, all-pervading and perfect. He is steady and whole and many. He is without remainder. You may meditate on him assiduously.



२०) नाऽहं न चाऽन्यत् वाऽस्तीति, ब्रह्मैवास्ति निरन्तरम् ।
आनन्दपूर्णं सर्वत्रेत्यऽनुद्वेगात् उपास्यताम् ॥

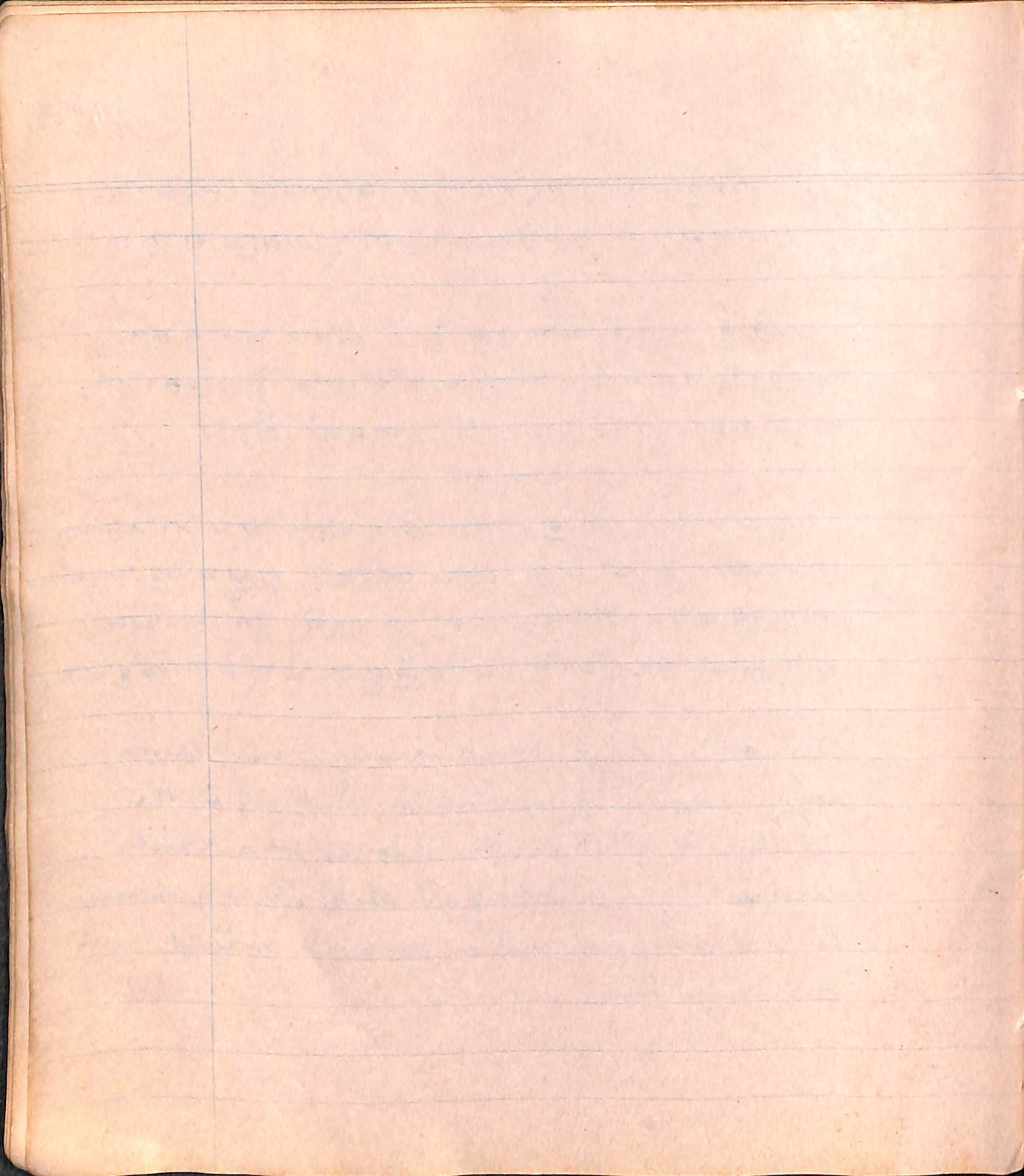
हिन्दी

न मैं हूं, न कोई अन्य वस्तु है । केवल आनन्दरूप ब्रह्म ही, सब जगह, परिपूर्ण-भाव से व्याप्त है । इसलिए, उद्वेग रहित होकर, उसी की उपासना करो ।

कश्मीरी

न छुस बह, न छु व्यथि कांह चीज़ यथ जगतस मंज़ यस ल्यठ अ'स्य प'ज़ नज़र अवव; ब्रह्मय छु पूर्ण्य सारिनुय जायन व्यांपिथ । सु छु पूर्ण- आनन्द-घन । अमि किन्य पज़ि असि त'म्य संज़ुय उपासना करुन्य ।

Neither do I exist really, nor does any other thing subsist actually in this world. It is Brahman alone, who exists eternally in a blissful state. Every where. Let us, therefore, with a composed mind propitiate Him.



२९) ग्राह्य-ग्राहक-संबन्धे सामान्ये सर्वदेहिनाम् ।
योगिनः सावधानत्वं यत् तत् अर्चनं आत्मनः ॥

हिन्दी ।

यद्यपि सारे देहधारियों की दृष्टि में ज्ञाता और ज्ञेय में एक साधारण सा संबन्ध है, परन्तु योगीजनों की दृष्टि में उस संबन्ध में जो एक निराली सावधानता जमी रहती है, उसी को आत्मार्चन के नाम से जाना जाता है ॥

कश्मीरी ।

आम्यतिच, सारिनुय लूकन हंज़ नज़र मंज़, ज्ञाता तु ज्ञेयस मंज़ अख मामूली संबन्ध ज़ानुन यिवान छु । लेकिन योगीज़नन हंज़ नज़रि मंज़ (यथ संबन्धस मंज़) छुस अख अजीब किसमुक सावधानता छि जमिथ आसान, तम्यच छि वनान आत्मदेव संज़ अर्चना तु पूज़ा ।

English :-

The attention of the people regarding the relation of the 'Knower' & the 'Known' is generally supposed to be a cursory one. But the undivided attention with which the Yogis look at that relation, is called the real worship of Atman (आत्मार्चन) ।

का

ता है।

ज्ञ-

शन

नव

... [illegible]

ed

[illegible]

=

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Chapter IX.
(The nature of the self).

वसिष्ठ उवाच :- says Vasishtha.

१) अस्मिन् देहेन्द्रियादीनां संघाते स्फुरति स्वतः।
अयं सोऽहं-इति भावः, स जीवो मलमुण्ठितः ॥

हिन्दी :-

देह, इन्द्रिय आदि के संघातरूप इस मनुष्य शरीर के ~~विकास~~ पर, जिस में स्वयं प्रकृति द्वारा चैतन्य और स्फुरणशीलता प्राप्त होती है, जिस मुख्य चेतनकण में, 'यह शरीर मैं ही हूं' वाला भाव उत्पन्न होता है, उसी को जीव के नाम से जाना जाता है।

कश्मीरी :-

देह, इन्द्रिय, आदिकिस संघातरूप यथ शरीरस मंज़, यथ खुद-ब-खुद ज़ुव अचिथ हरकत छि हावान नच़ान, यमिस मुख्य ज़ीवन-कणस, "मेह छुस यिय" अमि प्रकारुक ख़याल छु पैदु सपदान, तॅम्य सूत्य, मलन हुन्द परन आवुरिस, छि 'ज़ीव' वनान।

English :-

That life-cell, which, in course of associating itself with this mass of देह, its organs, senses etc. etc., ~~same~~ called human body, somehow begins to entertain the idea that I am the same body (अयं सोऽहं), is known as Jiva dressed in impurities (मल).

२) सर्वमेव चिदाकारं ब्रह्मेति घननिश्चये ।
स्थिरतां याते, शमं याति जीवो निःस्नेहदीपवत् ॥

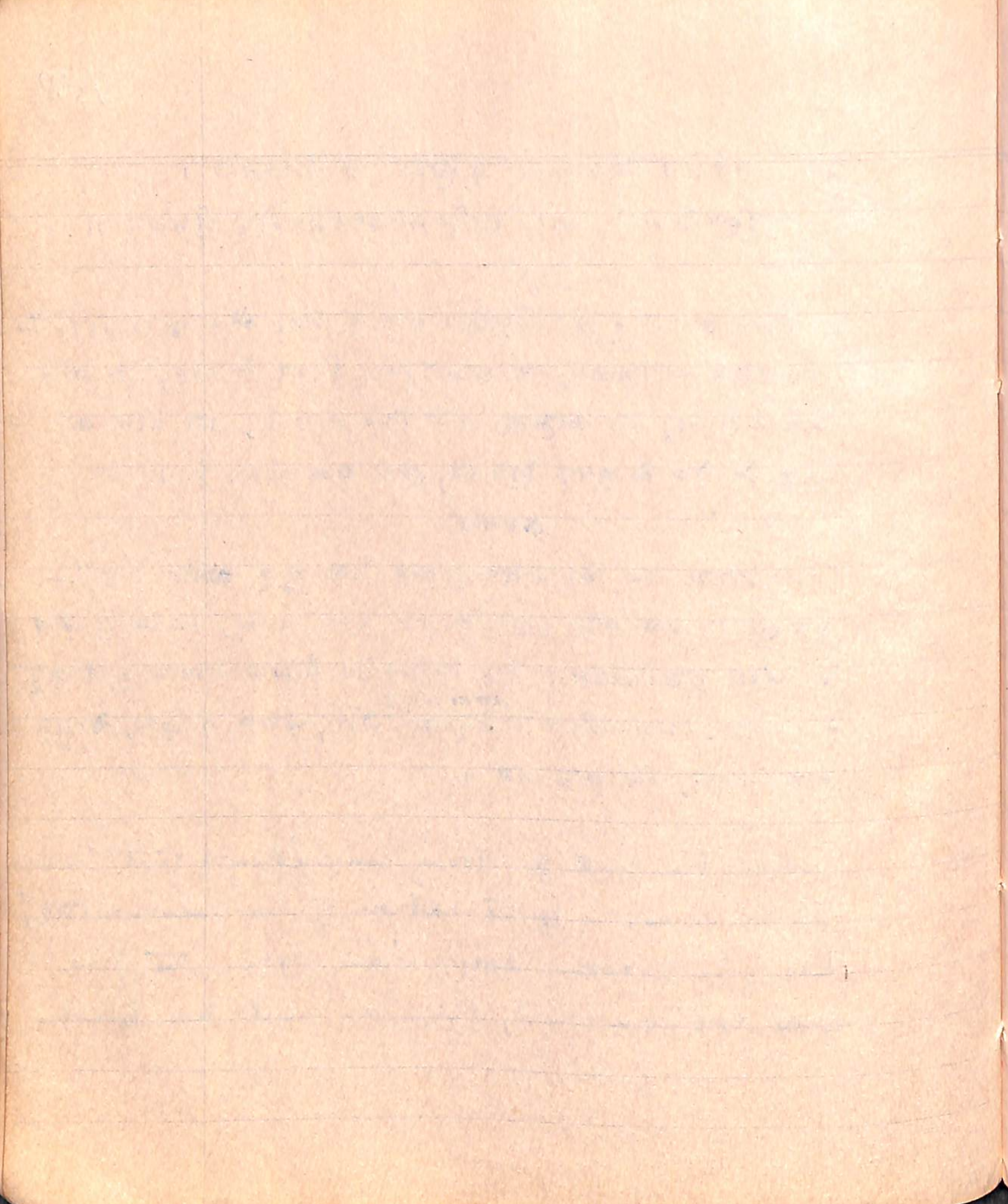
हिन्दी

"यह सारा विश्व, चैतन्यस्वरूप ब्रह्म के सिवा और कुछ नहीं है" इस प्रकार का निश्चय, जब दृढतापूर्वक स्थिर हो जाए, तो जीव-भ्रमकारी वस्तु का अज्ञान स्वयं मिट जाता है, उस दीप की तरह, जो तेल के समाप्त होने पर, स्वयं बुझ जाता है ।

कश्मीरी

"यि सोरुय विश्व, चैतन्यरूप ब्रह्मस सिवा छुनु केंह,"— युथ ह्यु निश्चय यलि द्रढतायि-सान स्थिर गछि, त्यलि छु जीव ति अंदस द्रढ निश्चयस मंज़ तिथ-पाठ्य गलिथ गछान त बोज़ुनु बु यिवान, यिथ-पाठ्य तील [खतम गछिथ] चोंग, कुमत गछिथ, बोज़ुन छुनु यिवान, यि छुत गव ।

When this kind of strong conviction — that "all this universe, is of the nature of Consciousness चित्"; has firmly taken root within you, the jiva gets extinguished, like an oil-less lamp.



३) स्वमहत्वं यथोपेक्ष्य कश्चित् विप्रो दुरीहया ।
अङ्गीकरोति शूद्रत्वं तथा जीवत्वं ईश्वरः ॥

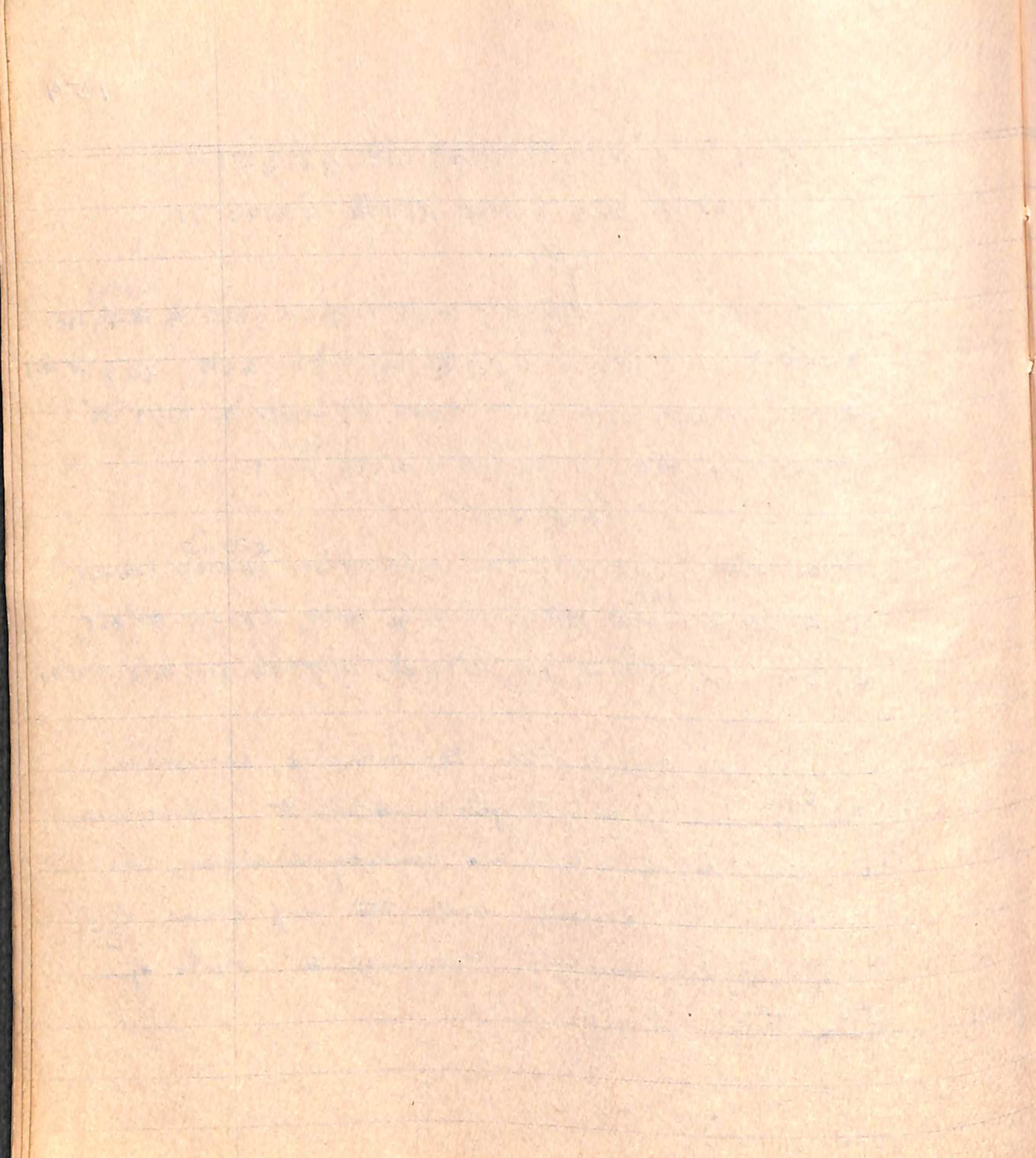
हिन्दी

जिस प्रकार कोई ब्राह्मण, किसी अनुचित इच्छा के ~~वशीभूत हो जाने से~~ कारण, अपने श्रेष्ठ सामाजिक स्तर की उपेक्षा करके, शूद्रत्व को स्वीकार करता है, उसी प्रकार ईश्वर भी माया के वश में पड कर, जीवभाव को अंगीकार करता है ।

कश्मीरी

यिथ-पाठ्य, कांह ब्राह्मुन, कुनि नाकार् ~~[illegible]~~ इच्छायि किन्य, पनुन ब्राह्मण-~~[illegible]~~ भाव त्रावित, शूद्र बनि, तिथय-पाठ्य, छु, ईश्वर ति, मायायि मंज़ फ'सिथ, जीवभाव स्वीकार करान।

Just as a high caste Brahmana, ignoring his high social position, gets tempted to become a Śudra, due to some unholy desire, so the Ishwara, coming under the influence of māyā, ~~is made to~~ accepts the state of limited self.



४) असत्यं एव संकल्प्य भ्रमेणेदं पुरीरकम् ।
जीवः पश्यति मूढात्मा बालो यक्षं इवोत्थितम् ॥

हिन्दी

जिस प्रकार, कोई अल्पबुद्धि बालक, अपने संकल्पों से उत्पन्न किए हुए एक खयाली भूत को अपने सामने खड़ा देखता है और उसे सत्यवत् मानने लगता है, उसी प्रकार यह मूर्ख जीव इस असत्य शरीर को भ्रम-वश सत्यवत् समझता है ।

कश्मीरी

यिथपॉठ्य कांह बेकल बालुक, अंदिस खयाली भूतस पुज़ मॉनिथ, पानस ब्रोंठकनि ज़न/ खडा लेखुत वुछान छु, तिथय पॉठिन्/ छु यि मूर्ख-जीव ति ~~छु~~ यथ अपज़िस शरीरस, भ्रमवश, पुज़ ज़न मानान ।

Just as an unintellegent boy, looks at a ghost, rising before him, whom he has conjured up out of his own imagination, and for some time, takes him to be/as if it were real, so the jiva, under delusion, looks at his accursed and evanescent body, as if it were a really substantial thing.

५) मृन्मये यथैभत्वं शिशुरुद्वीक्ष्य वल्गति ।
अध्यस्याऽऽत्मनि देहादीन् मूढस्तद्वत् विचेष्टते ॥

हिन्दी

जैसे एक छोटा बच्चा, मिट्टी के (खिलौने) हाथी को, वास्तविक हाथी समझ कर, हर्ष से नाचना आरंभ करता है; इसी तरह, यह मूर्ख जीव देहादि को आत्मा समझता हुआ, अनेक प्रकार की चेष्टाएं करता है ।

कश्मीरी

यिथ पाॅठ्य, अख बालुक, म्यचि हन्दिस खिलौन-हॅस्तिस वुज़ हुस माॅनिथ, नचुन ह्यवान छु, तिथय पाॅठ्य छि मूर्ख ज़ीव ति, देहस तु देहक्यन अंगन वांगन, पनुन्य पाॅठ्य आत्मा- ~~पुजुम~~ तिफुय माॅनिथ, छु ह्यकान नचुन तु व्यसि लगान कॅनि ~~स्यठा~~ प्रकारॅचि हरकॅच़।

Just as a child, ~~dances, with joy~~ on seeing a toy Elephant made of ~~earth~~ clay, dances with joy (for, he takes it for a real Elephant), similarly, a foolish person, considering, under delusion, his body ~~as~~ real as Atman, begins to act in manifold ways.

6) चित्रसर्पः परिज्ञातो न सर्पभयदो भवेत्।
जीवसर्पः परिज्ञातः तथा न सुखदुःखदः॥

हिन्दी

जब यह बात हमें ज्ञात हो जाए कि यह सत्य सांप नहीं बल्कि एक तस्वीर पर अंकित की हुई सांप की शकल है, तो हमें सांप के डसने का डर नहीं रहता। इसी तरह जीवसर्प को चित्रसर्प के समान असत्य जान कर, हमें उस के विषय में सुख-दुख की चिन्ता करना व्यर्थ है।

कश्मीरी।

यलि अंकित तस्वीरस प्यठ चित्रित ~~[illegible]~~ कुरमुत सरुफ वुछिव, अदि फिकिरि तरि, ज़ि यि छुनु पुज़ सरुफ, यलि छुनु अदि तॅम्युक कॉह ख़ोफ रोज़ान, तिथय पॉठ्य यलि यि देह ति चित्रसर्पस समान अपुज़ ज़ानोन, यलि छुनु अदि सु सुख-दुखुक कारण बनान।

As ~~When~~ a picture-serpent when known as such, does in no way frighten us; so the Jiva-snake also when known as unreal and illusive, is less powerful to cause either pleasure or pain to us.

७) स्रजि सर्पोऽयं अध्यस्तो मालायां एव लीयते ।
आत्मनः प्रोत्थितो भेदः आत्मन्येव विलीयते ॥

हिन्दी

जैसे भ्रमवश, माला को सांप जानने का संकल्प, भ्रम के दूर होजाने पर, उसी माला में ही लीन होजाता है, उसी तरह अपनी आत्मा से, मायावश, उठी हुई यह द्वैत [भावना] (शरीर को आत्मा से भिन्न जानना), मायानाश पर, स्वयं, उसी अपनी आत्मा में ही विलीन होजाती है ।

कश्मीरी

यिथ-पाॅठ्य, भ्रम-किन्य, मालि [प्यठ] सरफुक अध्यास, भ्रम मिटनस प्यठ, तॅथ्य मालि-मंज़ुय छु लीन सपदान, तिथय पाॅठ्य, मायायि किन्य, पननिस आत्मास निशि, वॅथ्यमुत, यि द्वैत भावना, (अर्थात् आत्मास तु देहस भिन्नता मानुन्य) छि, मायागलनस प्यठ, पानिस आत्मास मंज़ुय पानय लीन गछान ।

As under delusion, notion of a snake, ascribed to a garland, sinks into the garland itself, on the expiry of delusion, so does submerge the notion of duality, in our self, wherefrom it had sprung through maya.

8) नैकं अप्यङ्गदाद्यैः च यथैकं हेम संस्थितम्।
उपाधिभिः अनेकोऽपि तथात्मैकः स्वभावतः॥

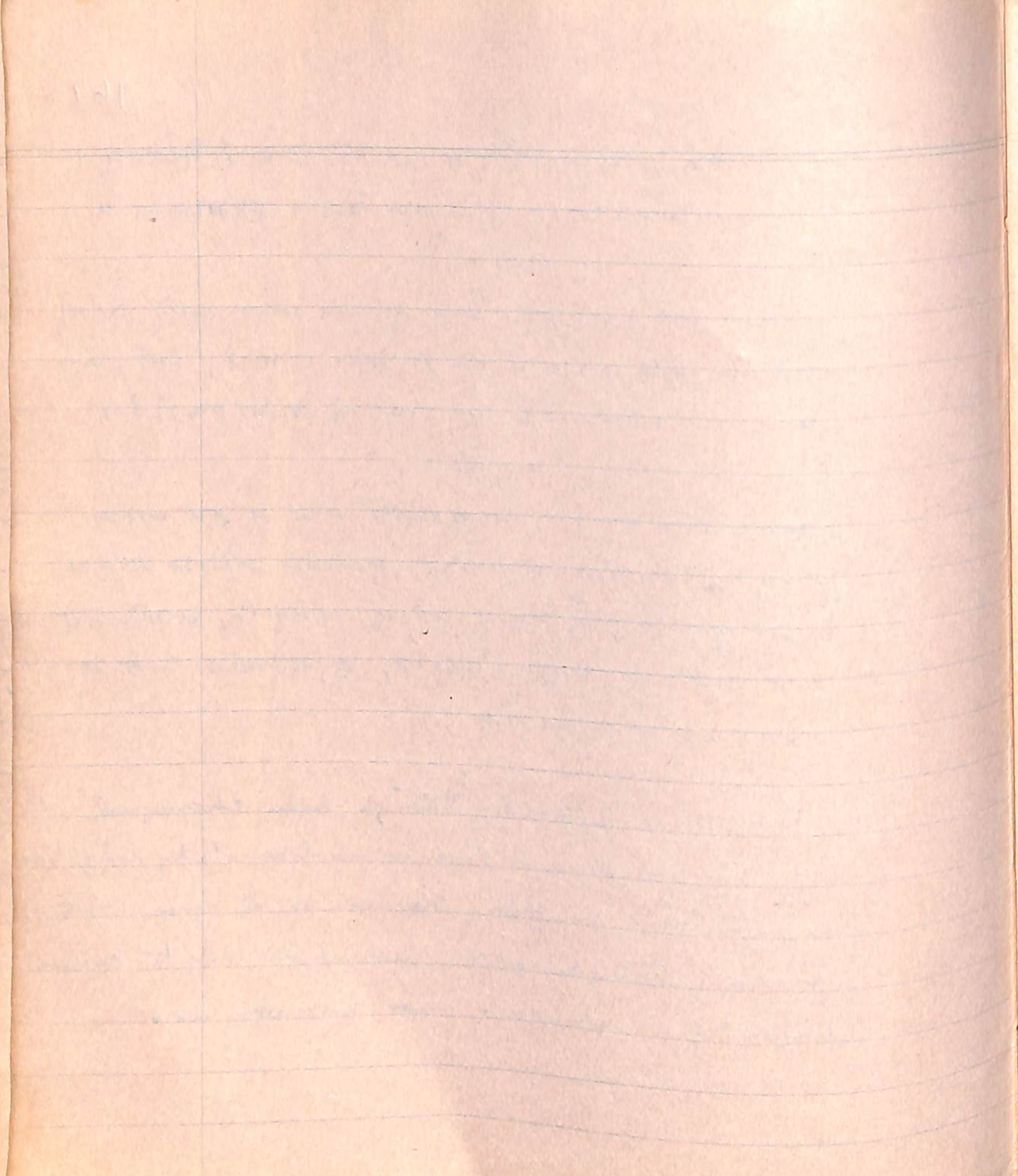
हिन्दी

अंगद आदि भूषणों द्वारा, नाना नामरूप धारण करने पर भी, जिस प्रकार सोना, वास्तव में एक ही सोना रहता है, इसी प्रकार उपाधि द्वारा अनेकता को प्राप्त होकर भी आत्मा एक ही है।

कश्मीरी

स्वनस ज़ेवर बनाविथ, नाना प्रकारि नाव तु रूप धारण कॅरिथ ति, सिरफॉठ्य, पॉज़्यपॉठ्य, छु केवल अकोय स्वनुय छु नलकनि रोज़ान, इथय पॉठ्य, आत्मा ति, उपाधियव किन्य अनेक रूप धारण कॅरिथ ति, छु, नलकनि अकोय अद्वैतरूप आत्मा रोज़ान।

As a piece of gold, though seen changed into various forms such as — bracelets, rings etc. remain ever as such, similar is the case with Ātman, though seen manifold due to various limitations, remains ever immutable.



५) शरीरेऽवयवाः यद्वत् विकाराश्च यथा मृदः ।
अद्वैतं द्वैतवत् भाति, तथा स्थावर-जंगमम् ॥

हिन्दी

शरीर के अंग, मिट्टी के बर्तन, जिस प्रकार शरीर और मिट्टी से अभिन्न होते हुए भी, भिन्न जैसे भासते हैं; उसी प्रकार, यह स्थावर जंगम विश्व भी, ब्रह्म से अभिन्न होते हुए भी भिन्न सा दीखता है ।

कश्मीरी

शरीरुक अंग, तु, यथि म्यच़ि-बानु, यिम वांठ्य, शरीरु तु म्यच़ि निशि, अलग न आसिथ ति, बोति, छि, अलगु किन्य, अलगुय बासान, तिथय पांठ्य, यि जड़-जङ्गम-रूप, विश्व ति, ब्रह्मरूपुय केवल आसिथ ति, छु मायायि किन्य अजि ब्रह्म-अलगुय बासान।

As the various parts of the body, though really one with it (body), appear to be as if they are quite different from it; or the earthen pots etc, though really one with earth, seem to be as if they are separate from it, so the moveable & immoveable world though really existing as one with Brahman, seems ~~asif~~ as if it were separate from It, through the power of māyā.

१०) मणि-तोय-घृतादर्शेष्वेकं मध्याननं यथा ।
भात्यऽनेकमिवाऽऽत्मापि तथा धीष्वनुबिंबित: ॥

हिन्दी

रत्नों में, जल में, घी में, तथा शीशों में, जिस तरह, हमारा मुख, प्रतिबिंबित होकर, केवल एक ही होने पर भी, अनेक शकलें धारण कर, हमें, हर बार, अनेक-रूपी दिखाई देता है, उसी तरह, हमारी आत्मा भी, केवल एक ही होते हुए भी, हमारे भिन्न२ संकल्पों का जामा पहन कर विभिन्न रूपों से प्रकट होने लगती है ।

कश्मीरी

रत्नन मंज़, पा'निस मंज़, ग्यवस मंज़, ब्याखि शीशस मंज़, पनुन बुथ वुछिथ, यिथ पा'ठ्य, यि कुनुय आ'सिथ ति भिन्नरूप छु बासान, तिथय पा'ठ्य छु यि आत्मा ति, केवल कुनुय आ'सिथ ति भिन्नरूप बासान, यति मा'निस ल्यस ज़ानें प्रकारक्यन सा'न्यन संकल्पन हुन्द पलव लागान छु ।

As our face, though single, appears to be manifold as it is differently reflected in mirror, ghee, water, and other transparent gems, so our Atman looks as if it were manifold, when it is differently reflected in ones thoughts & imagination etc.

११) धूलिधूमाम्बुदैः यद्वत् मलिनी क्रियेते नभः।
परामृष्टः तथैवात्मा विशुद्धः प्राकृतैः गुणैः॥

हिन्दी

स्वच्छ तथा निर्मल आकाश, जिस प्रकार, धूलि, धुआँ और बादलों से स्पृष्ट होकर अपनी स्वच्छता को खो डालता है, उसी प्रकार, यह हमारी शुद्ध और मलरहित आत्मा, प्रकृति के गुणों से (सत्व, रजस् और तमस् से) स्पृष्ट होकर मलों को धारण करती है।

कश्मीरी

दृह्, ओुर तु गर्दि-गुबारु सूत्य मिल-जाँव्य यि निर्मल आकाश म'ल्युन छु बोज़नु यिवान, तिथय पाँठय, यि सोन शुद्ध तु, मलरहित आत्मा, प्रकृति-हन्द्यन गुणन हुन्द स्पर्श प्राप्त कॅरिथ, छु, बार-बार मॅल्युन हयकान गछ्छुन।

As the sky, though cristle clear, looks darkened by clouds, smoke, dust etc., so the Self, though pure, looks darkened by the qualities of nature (प्रकृति), i.e. सत्व, रजस् and तमस्।

[illegible] English:-

२a) The Atman, while residing in our body, appears, as if it also, like our body, undergoes, birth & death, although it is unaffected by both, just like a pillar ~~moving to & fro~~ reflected in stormy water, looks going up & down though deeply driven into it (water).

२२) आद्यन्तवति देहेऽस्मिन् तथाभूत इवेक्ष्यते ।
वीचिमत्यम्भसि स्तम्भः यथा भाति चलः चले ॥

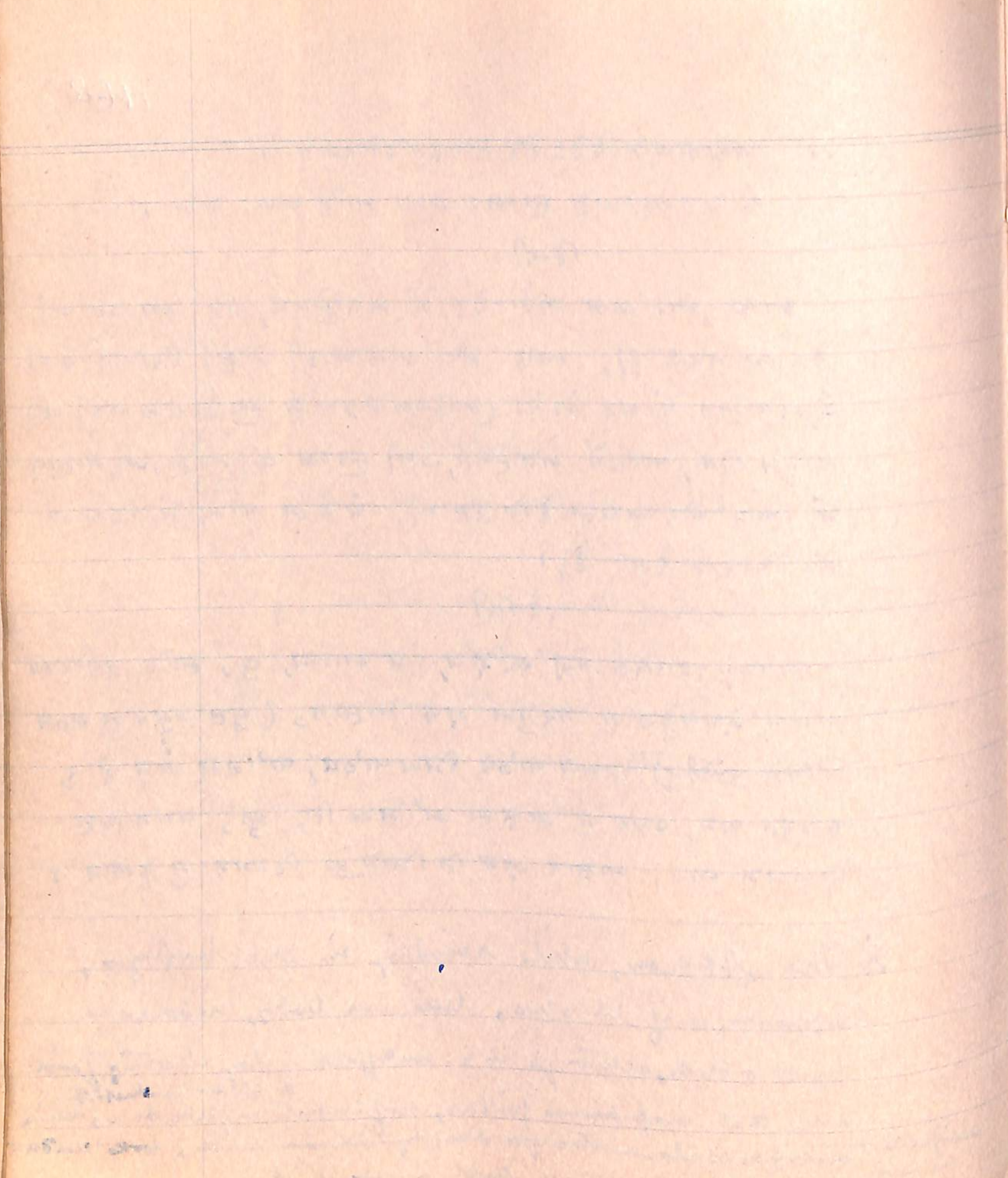
हिन्दी

आद्य और अन्त वाले देह में अवस्थित, यह आत्मा भी देह की तरह ही, आदि और अन्त वाली जैसी दिखाई देती है,+(वास्तव में यह दोनों (आदि-अन्त) उसे स्पर्श तक नहीं कर पाते)+ ठीक, पानी में अवस्थित, उसी स्तम्भ की तरह, जो, वास्तव में, स्थिर और अचल होते हुए भी, चंचल पानी में हिलता सा दिखाई देता है ।

कश्मीरी

[illegible] शरीरस मंज़ [illegible], यि आत्मा, छु, [illegible] शरीरुक्य पाँठिन, [illegible] तु मरवुन [illegible] [illegible], ([illegible] तु [illegible] [illegible] [illegible]) तिथय पाँठ्य, यिथ पाँठ्य, पाँनिस मंज़ [illegible] [illegible] थम, [illegible] तु अचल आँसिथ ति, छु, पानिकिस हिलनस [illegible], [illegible] [illegible] ति [illegible] हिलान तु डुलान ।

※ The Atman, while residing in our bodys, appears, as if it also, like our body, undergoes birth & death, although it is unaffected by both; just like that ~~deep driven~~ pillar, reflected in a stormy sheet of water, ~~which as if it looks invisible, although deeply driven in it,~~ looks undulating, although deeply driven in it.



२३) अग्नि संगात् यथा लोहं अग्नित्वं उपगच्छति ।
आत्म संगात् तथा गच्छत्यात्मतां इन्द्रियादिकम् ॥

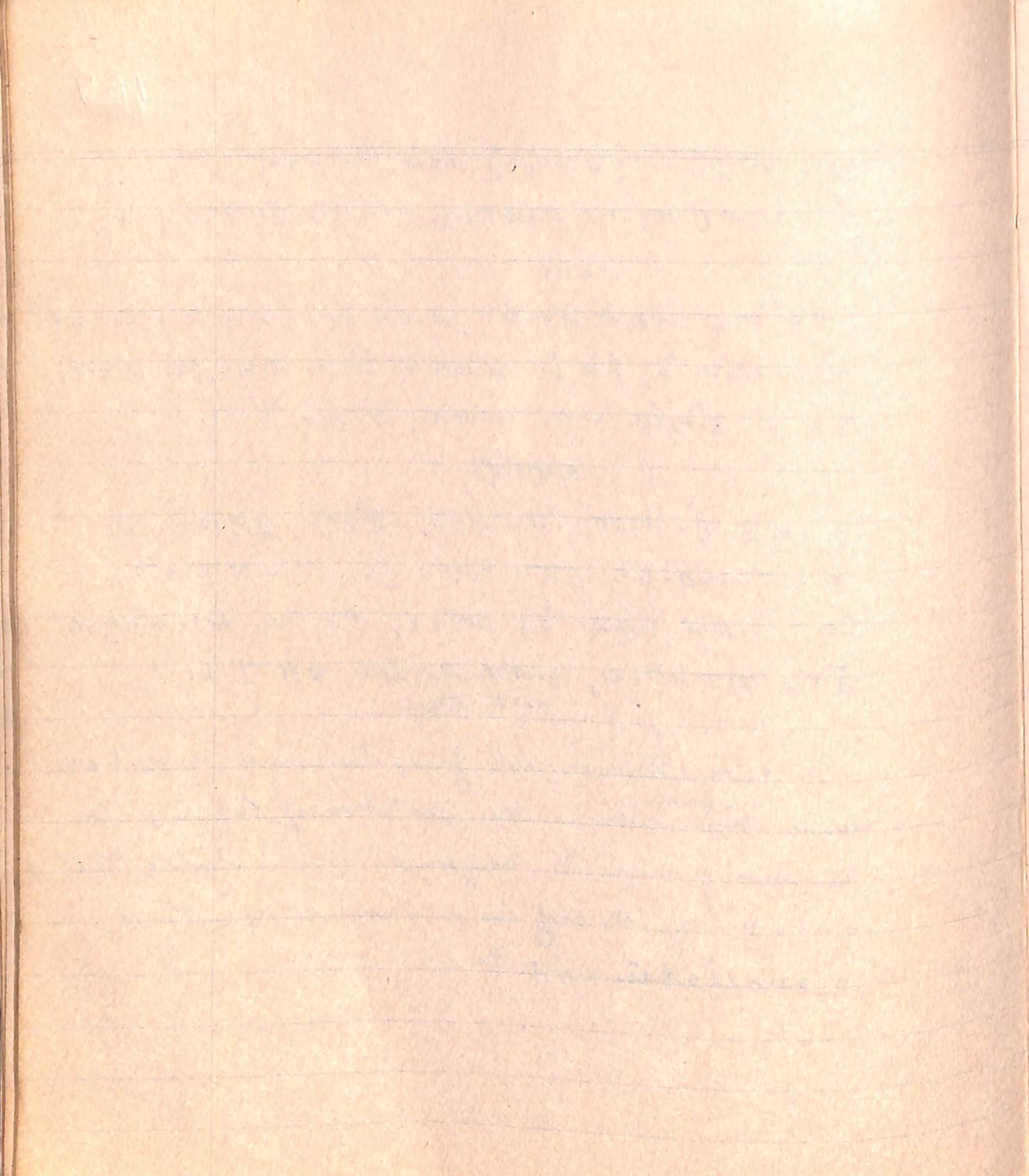
हिन्दी

जैसे लोहा अग्नि के संग से रक्त-तप्त होकर अग्नि के गुणों को ग्रहण करता है, वैसे ही, आत्मा का संपर्क पाकर, यह हमारी देह और इन्द्रियाँ आदि आत्मवत् हो जाती हैं ।

कश्मीरी

अग्नि-संग-किन्य, यिथ पा'ठ्य, शं'स्तुर, वुज़ुल ते नुत बनिथ, अग्नि-गुण ग्रहण करान छु, तिथय पा'ठ्य, यिम सा'न्य इन्द्रिय, देह आदि'र, ति, छि, आत्मा सुन्द संपर्क प्राप्त क'रिथ, ~~आत्म-वत्-युक्त~~ आत्म-स्वरूप बनान ॥

As iron, thrown into fire, becomes red-hot and ~~thus~~ as such attains the qualities of fire, so the body and its organs etc. imbibe the qualities of the self as a result of their association with It.



(८८) अदृश्यो दृश्यते राहुः गृहीतेन यथेन्दुना ।
तथानुभवमात्रात्मा दृश्येनाऽऽत्माऽवलोक्यते ॥

हिन्दी

जैसे यह अदृश्य राहु तब तक आँखों से नहीं देखा जाता है जबतक न यह चन्द्रमा को ग्रस लेता है। वैसे ही यह आत्मा भी, जो केवल अनुभवगम्य है, तब तक नहीं देखी जाती है जब तक न यह, दृश्य जगत् में, ओतप्रोत हो गई हो।

कश्मीरी

युस राह अछि बोज़न छुनु यिवान नताम, यताम न यि चन्द्रमस ग्रास छु करान। तिथय पाँठ्य यि आत्माति, युस केवल अनुभवगम्य छु, छिनु अंछ्य/ह्यकान वुछिथ नताम, यताम यि यथ दृश्य ज़गतस मंज़ व्यापुत आसि नु ॥

As this invisible Rahu remains invisible to us, so long as it does not Eclipse the moon, so this Ātman, although perceivable through pure experience alone, is visualised by us only when it is pervading the visible world.

आत्मनो जडसंगात् स्यात् अनात्मत्वं, जडस्य तु ।
स्यात् आत्मसंगात् आत्मत्वं, जलाग्न्योः संगवन्मिथः ॥

हिन्दी

जड के संग से आत्मा को अनात्मता प्राप्त होगी तथा जड भी आत्म-संग से आत्मता धारण करेगा । जैसे जल और अग्नि, परस्पर संग से, एक दूसरे के रूप को क्रमशः धारण करेंगे ।

कश्मीरी

देहस सूत्य संग थॅविथ, आत्मा ति बनि जड-देहस्वरूप । संवयेन, जड-देह ति बनि आत्म~~संगि~~-संग-सूतिन, बनि आत्म-स्वरूप । यिथ पॅठय, पोन्य तु नार, अख अॅक्यसॅन्दि संग-सूत्य, अख अॅक्य सॅन्दिस रूपस क्रमपूर्वक धारण करन ।

Atman, identifying itself with the body will, turn into Anātmatwa naturally and the body identifying itself with the Atman will naturally assume Ātmatwa, just as the water & fire associating mutually, do assume each others' forms.

२६) असत्यजडचित्तांशान् अयन्नत् चिद्वपुः जडम् ।
महाजलगतो वह्निरपि स्वं स्वं उज्झति ॥

हिन्दी

यह आत्मा, चित्स्वरूप होते हुए भी, असत्य और जड चित्तांशों (अन्तःकरण आदि) पर निरन्तर भावना धारण करने से, जिस जड-रूप को धारण करती है (अपने को देह-रूप समझने लगती है), उस जड-रूपता को वह, महत् चैतन्य में समाविष्ट होने पर, उस प्रकार त्याग देती है, जिस प्रकार अग्नि, समुद्र में प्रवेश करने पर अपने अग्नित्व को त्याग देती है ।

कश्मीरी

यि आत्मा, चित्स्वरूप आसिथ ति, असत्यन तु जडरूपी चित्तांशव (अन्तः करण आदिस) प्यठ, निरन्तर भावना धारण करनु सूत्य यथ जडरूपतायि प्राप्त करान छु, तथ मिथ्याभावनायि, छु, सु महत्-चैतन्यस मंज़ समाविष्ट सपदिथ तिथपॉठ्य त्रावान, यिथपॉठ्य अ॑गुन, समुद्रस मंज़ अ॑चिथ पननिस अग्निरूपस त्रावान छु ॥

The form of अनात्मत्व-(जड), which the Ātman, notwithstanding its being चिद्रूप, likes to assume, under constant pondering over, the insensitive (जड) and unreal body and its organs of senses etc., ~~comes to possess~~, gets liquidated instantly on its entering into महाचैतन्य, just like the fire, which gets extinguished on entering into ocean.

१७) इक्षौ गुडः तिले तैलं काष्ठे वह्निः दृषद्ययः ।
धेन्वौ आज्यं वपुष्यात्मा लभ्यते चैव यत्नतः ॥

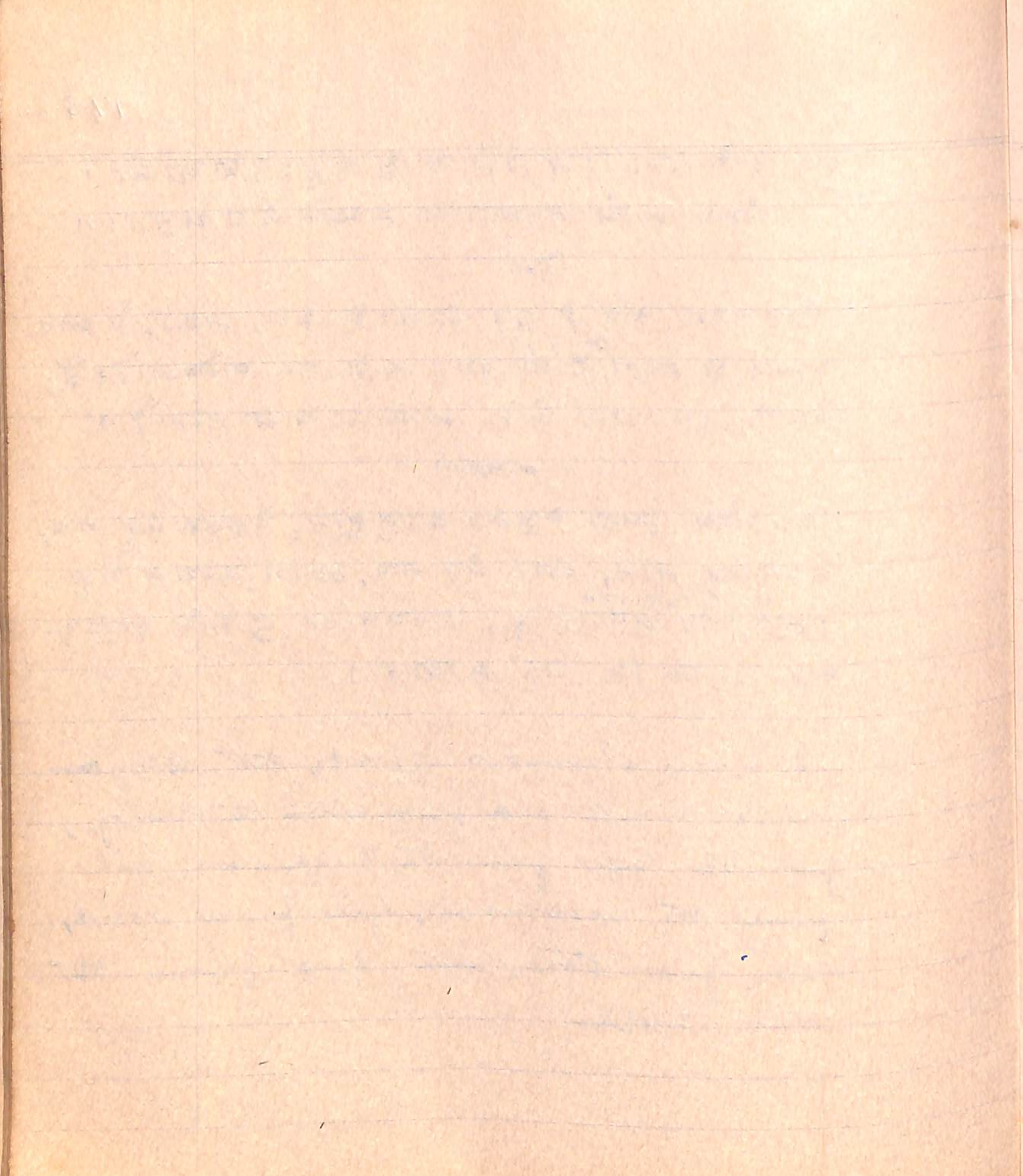
हिन्दी

जिस प्रकार, ईख से गुड़, तिलों से तेल, लकड़ी से आग, पत्थर से लोहा, गेऊ से घी काफी प्रयत्न करने पर पाये जाते हैं, वैसे ही, इस शरीर में से आत्मा को पाया जाता है ।

कश्मीरी

यिथ पाॅठ्य स्यठा मेहनत करनु सूत्य, नैशकर-मंज़ गोर, तेल-मंज़ तील, काठ-मंज़ नार, ब्यनि कन्यव मंज़ शांहतर, तु गाॅव सिरिन्यव प्राप्त सपदान छु, तिथय पाॅठ्य छु यमि शरीरु-मंज़ आत्मा ति प्राप्त सपदान ।

It is with strenuous Efforts, that Atman can be found out from within the body, just like sugar from the sugarcane, oil from the sesamum, fire from wood, iron from stone, and Ghee from the cow's milk.



२८) स्फटिकाश्मनि नीरन्ध्रे स्थितं खं वीक्ष्यते यथा ।
तथा सर्वपदार्थेषु चिद्रूपः परमेश्वरः ॥

हिन्दी

जिस प्रकार एक ठोस संगमर्मर के पत्थर में, 'खं' अर्थात् शून्याकाश का अस्तित्व पाया जाता है, उसी प्रकार, सारे पदार्थों में चिद्रूप परमेश्वर का अस्तित्व पाया जाता है ।

कश्मीरी

यिथपाँठ्य अँकिस ज़्रदि-सङ् (ठोस) स्वठकुचि कनि मंज़ शून्याकाशुक ~~(प्रतिबिंब)~~ आसुन, बोज़नु छु यिवान, तिथय-पाँठ्य छु चिद्रूप परमेश्वर-सुन्द अस्तित्व ति, सारिनुय पदार्थन मंज़ ज़ाननु यिवान ।

As ~~within a solid crystle stone~~, 'खं' space or s'unya, ~~is found out to pervading~~ pervades a solid cristle ~~it~~, so ~~does~~ does the supreme Lord of the form of चित्, ~~seen permeating~~ permeate all the objects of the world.

English:— Just as 'खं' (space or s'unya) is seen pervading a solid cristle, so does the चिद्रूप supreme Lord permeate ~~of~~ all the objects of the world.

१५) बहिरन्तः स्फुरन्-ज्योतिः रत्नकुंभप्रदीपवत्।
स्वप्रकाशात् यथैवैकः स्वरूपं आत्मनः तथा॥

हिन्दी

रत्न कुंभ में अवस्थित एक ही प्रदीप, जिस तरह, अपने प्रकाश से बाहर और अन्दर, रोशनी कर देता है, उसी प्रकार आत्मा का भी स्वरूप है जो 'घर' में अवस्थित, केवल एक ही होने पर भी, बाहर और भीतर उजाला कर देता है।

कश्मीरी।

रत्न-कुंभस मंज़ काग ज़ोचमुत, अख ज़ोलमुत ज़ोंग, यिथपॉठ्य पननि गाशि सूत्य, छु, अंदर त न्यबर रोशनी दिवान, तिथय पॉठ्य, छु, आत्मनुक स्वरूप ति, युस सॉनिस 'घटस' अर्थात शरीरस मंज़ रूज़िथ, न्यबर त अंदर प्रकाश दिवान छु।

Just as a lamp, placed inside a transparent jar, lights both within & without, so does the self, seated within our body, shed its light both within & without.

२०) दर्पणे बिंबितो ह्यर्कः प्रकाशं कुरुते यथा।
तथा प्रकाशयत्यात्मा स्वच्छधीष्वनुबिंबितः॥

हिन्दी

दर्पण में प्रतिबिंबित होकर, जिस प्रकार, सूरज प्रकाश को प्रदान करता है, उसी तरह, यह आत्मा भी निर्मल बुद्धि में प्रतिबिंबित होकर, पदार्थों को प्रकाशित करता है।

कश्मीरी

यिथ-पा॑ठ्य, सिर्य, अ॑नस मंज़ प्रतिबिंबित सपदिथ, पनुन प्रकाश छु दिवान, यि आत्मा, ति, छु, विषय-पा॑ठ्य, साफि निर्मल बुज़ मंज़ प्रतिबिंबित सपदिथ, सारिनुय पदार्थन प्रकाशान करान।

English :-

As the Sun shines forth when reflected in a mirror, so does the Atman, shed its radiance when reflected in the clear intellegence of the wise. ~~persons~~.

२९) यत्र स्थिते यं विश्वश्रीः प्रतिभामात्र-रूपिणी।
रज्ज्वां भुजंगवत् भाति, सोऽयं आत्मा सदोदितः॥

हिन्दी

दृश्यप्रपंच की यह चमक दमक, जो केवल प्रकाशरूप है, जिस पर आधारित होकर, झूठी होने पर भी, ऐसी वास्तविक ज्ञात होती है, जैसे, अज्ञानवश, रस्सी ~~को~~ पर साँप ~~समझा जाता~~ सर्प-बुद्धि होती है, वही यह आत्मा है, जो सदा जागृत है।

कश्मीरी

सारी ज़गतुच यि चमक-दमक, युस केवल प्रकाश-रूप छह, यॅमिस प्यठ टिकिथ, अपुज़ ऑसिथ ति, पज़ि पॉठ्य बासान, /युथ, रज़ि प्यठ, अज्ञानवश, ~~[illegible]~~ अहि सर्प बुद्धि छु बासान छे, सुय ~~[illegible]~~ बासान, शुद्ध सदा ज़ागरूक रोज़न वोल आत्मा।

This worldly splendour, which is of the nature of pure light alone, though totally false, appears as real as, due to delusion, a snake in a rope, lent supported by whose ~~grace~~ grace, that supporter is known as an ever-awakened Ātman.

२२) आद्यन्तरहितः शश्वः चिद्रूपः निर्विकल्पकः ।
आत्मा निरूपिताकाशः जीवस्याद्यः परात् परः ॥

हिन्दी

जिस का न आरंभ है और न अन्त है (या जो जन्म-मरण रहित है), जो सनातन सत्य है, जो चैतन्यस्वरूप है, जो संकल्प-विकल्पों से निर्मुक्त है, जिस का अस्तित्व आकाशवत् (नीरूप) है; जो पर से भी परतर है, उसी को आत्मा के नाम से जाना जाता है और जो जीव से पूर्व आविर्भूत हुआ है (जीवस्याद्यः)।

कश्मीरी

आत्मा छि तॅह्य वनान, युस आदि तु अन्त रॅहित छु; युस पुज़ तु सनातन छु; युस चिद्रूप छु; युस संकल्पव निश्च मुक्त छु; युस आकाशवत् छु निर्मल तु रूप रॅहित; युस आदि स्वोतु ज़ुद छु; यानि, युस ज़ीव सॅ ब्रोण्ठय प्रकट सपुदमुत छु।

Atma is to be known as one who is without beginning and end; who is an Eternal Youth; who is of the nature of चित् (consciousness); in whom no ideas rise; who is as pure as Ether; who, by birth, is senior to Jiva; and who is said to be higher than the highest.

२२) आत्मा विशुद्ध-चैतन्य-स्वरूपः शाश्वतः विभुः।
निर्विकारः स्वयंज्योतिः स्वभावोऽर्क प्रकाशवत् ॥

हिन्दी

आत्मा सर्वव्यापक, सनातन, तथा शुद्ध-चिद्रूप है। वह निर्विकार है और सूर्य के प्रकाश की तरह स्वभाव से ही स्वयंज्योतिः है।

कश्मीरी

आत्मा छु सर्वव्यापक, सनातन त्युथ शुद्ध-चिद्रूप। सु छु निर्विकार, तु सिर्य-प्रकाशिक पाठ्य स्वभाव-किनी पानय ज़ोतवुन (स्वयंज्योतिः)।

The Atman is said to be of the form of transcendent consciousness, eternal and all-pervading. He is changeless, and known as to be ever possessed of inborn light like the light of the self-radiant Sun.

२४) आत्माऽनुभवमात्रात्मा सर्वगः सर्वसंश्रयः।
प्रकाशाऽनन्य चैतन्याऽव्यतिरिक्तोऽनलोष्ण्यवत्॥

हिन्दी

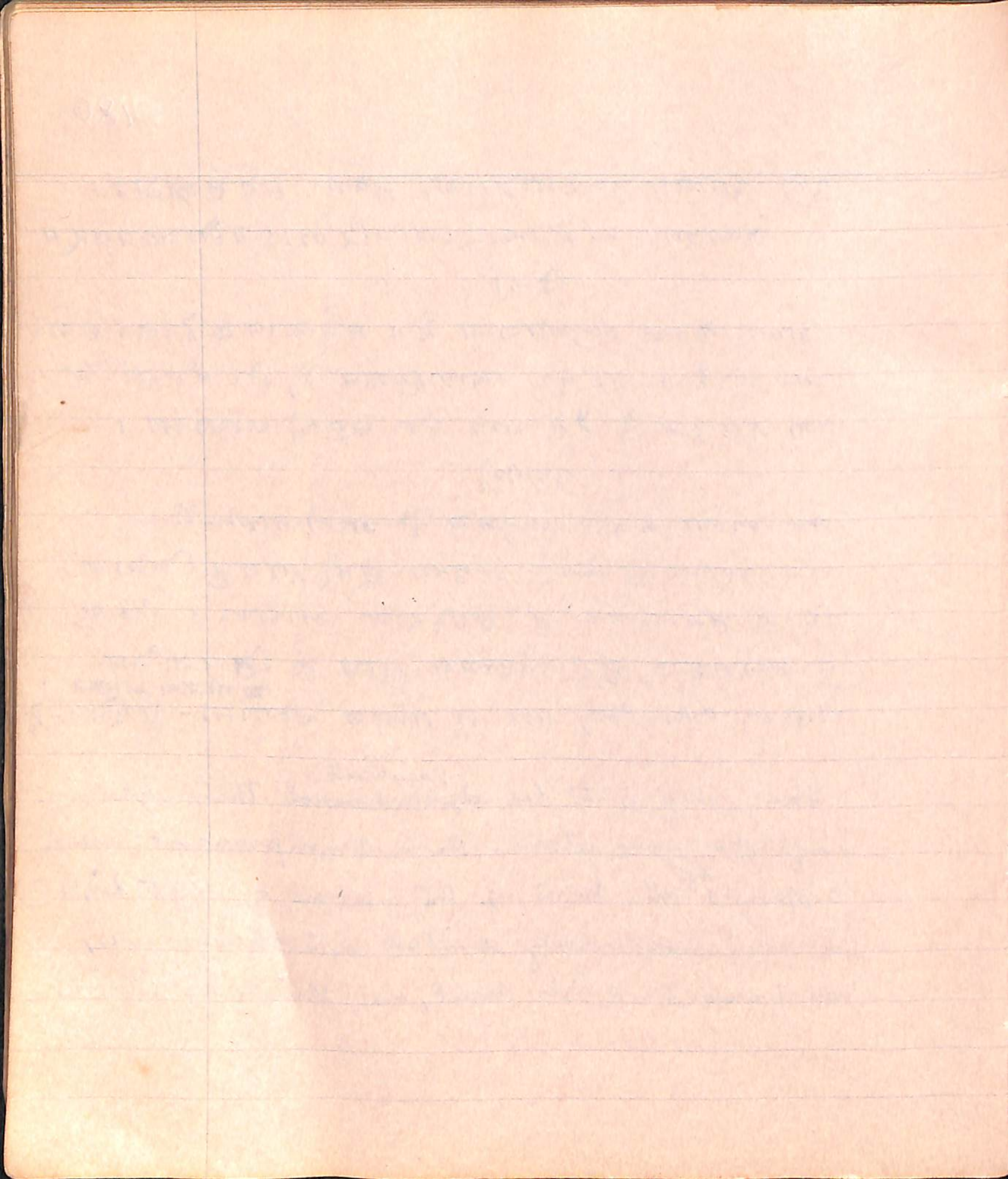
आत्मा केवल अनुभवगम्य है। सर्वव्यापक होकर सर्वाधार भी है। यह वह प्रकाशस्वरूप है, जो चैतन्य से ऐसा जुड़ा हुआ है जैसे आग और उसकी उष्णता।

कश्मीरी

~~यह आत्मा केवल अनुभव से जानी जाती है~~

यि आत्मा छु केवल अनुभव-सूती ज़ानुनु यिवान। यि छु यि छु सर्वव्यापक त सारिवुय आधार। यि छु छु प्रकाशरूप, युस चैतन्यस सुत्य छु मीलिथ आसान। बिलकुल ज़िथ पाठ्य, नार त तमिच उष्णता - वुपूनव-ऽ मीलिथ, यिथ पाठ्य,

The self is to be ~~discerned~~ realised through Self-experience alone. He is Omnipresent and support of all. He is of the nature of that light which is inseparably united with chaitanya, as fire and its heat, are united together.



२५) चित्तवर्जित-चिन्मात्रः परमात्माऽवभासकः ।

स बाह्याभ्यन्तरव्यापी निष्कलो निश्चलाश्रयः ॥

हिन्दी

यह आत्मा केवल वह चैतन्यरूप है जिस में चित्त का भी स्थान नहीं । वह ~~हमें~~ दृश्य जगत् की हमें पहचान ~~हमें~~ ~~प्रदान~~ कराने वाला परमात्मा है । अन्दर और बाहर वही व्याप्त है । वह पूर्ण है और उस का स्थान अटल है ।

कश्मीरी

यि आत्मा छु स्युथ चैतन्य-रूप यथ मंज़ चित्तस ति जाय ~~छनु जाय~~ । यि छु परमात्म-रूप । अंदयुमिस बेरुन्यि सृनी छि अंस्य यि दोख्यय ज़गतुक प्रपंच ज़ानिथ ह्यकान । अन्दर तु न्यबर तु प्रथजायि छु यि व्यापिथ ~~[illegible]~~ रूज़िथ । यि छु पूर्ण तु अटल ।

That Atman is, of the nature of चित् alone, in which there is no room even for चित्त (mind). He is called Paramātmā. He is the revealer of things. He pervades the world, within & without. He is whole & partless; He ~~is of~~ stands on an unvarying foundation.

२६) स आत्मा चिन्मयः स्वच्छः प्रबुद्धोऽप्रचयच्युतः।
हेय-ग्राह्योज्झितो देशकाल जात्याद्यसंगतः॥

हिन्दी

वह आत्मा, चिन्मय, स्वच्छ, और सदा जागरूक है। वह
अक्षर है, उस में त्याज्य और अत्याज्य विषयक भावनाएं
लुप्त होगई हैं। उसे देश, काल, जाति आदि से कोई संबंध नहीं॥

कश्मीरी

सु आत्मा छु चिन्मय-चेतनरूप, निर्मल तु सदा जाग-
रूक। सु छु अक्षर। अमिस मंज़ छु नु अमि प्रकारुक
यि कॉंह ख्याल, ज़ि म्यह क्या प्रत्याग रटुन तु क्या ग्रहणयस
त्रावुन। देशस, कालस तु जाति सूत्य, ति, छु नु अमिस
कॉंह संबन्ध।

The Ātman is of the nature of चित,
pure and ever-awake. He is free from
domination & unmindful towards हेय & ग्राह्य
i.e. which things should be rejected and
which should be accepted. He is unrelated
to time, space, caste and creed.

२७) ब्रह्माण्डे च यथा वायुः सर्वभूतगतस्तथा ।
स एव भगवान् आत्मा, तन्तुः मुक्तास्विव स्थितः ॥

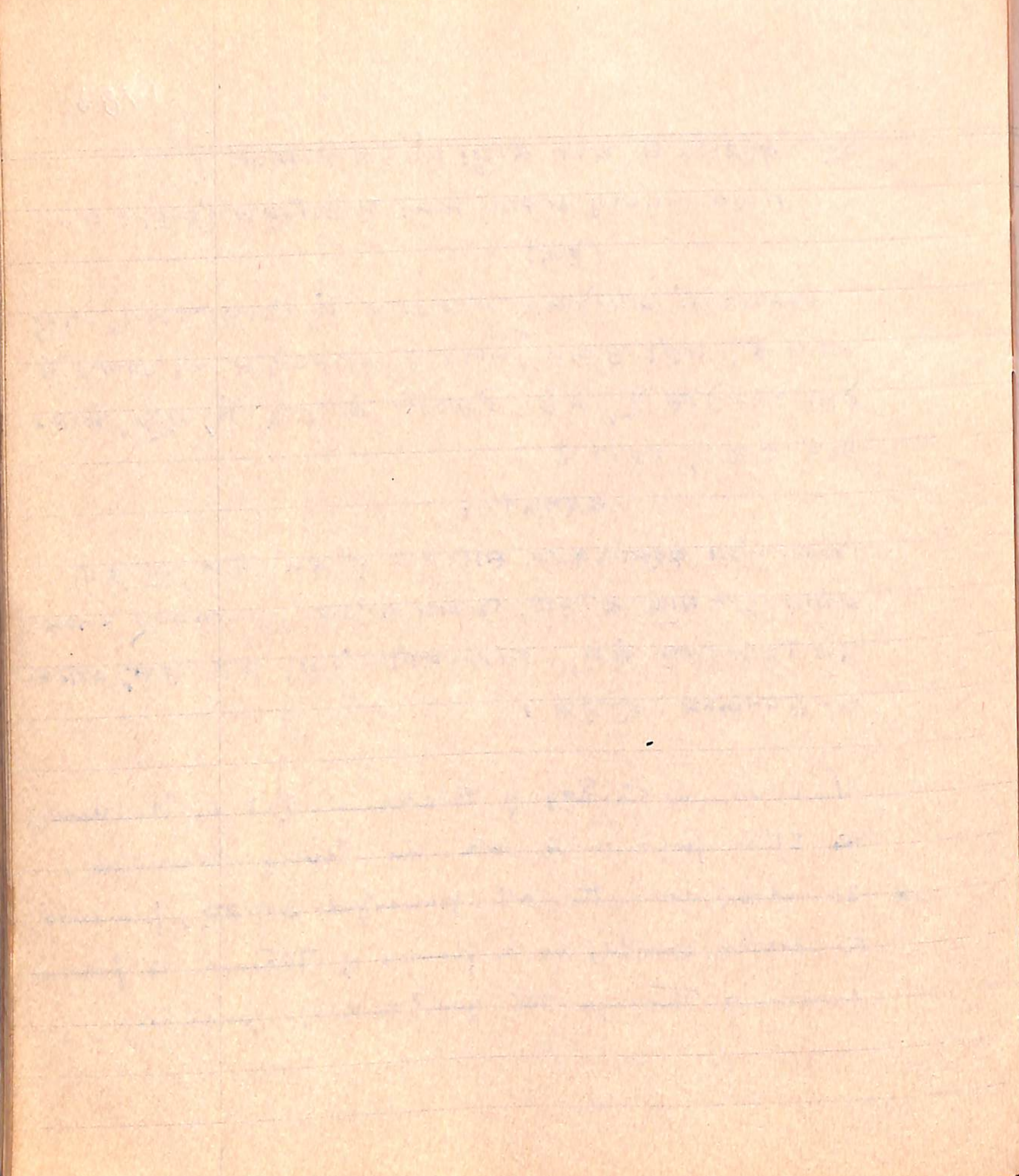
हिन्दी

ब्रह्माण्ड में अवस्थित जीवगण में, जिस प्रकार, वायु व्याप्त है, उसी प्रकार, वही भगवान् आत्मदेव भी जगत् में ऐसा ओतप्रोत है, जैसे मोतियों के हार में, सूत्र, ओत-प्रोत होकर, रहता है ।

कश्मीरी ।

यिथ-पांठ्य ब्रह्माण्डवयन स्यदिन्य ज़ीवन मंज़, छु, हवा अर्थात् प्राणवायु ब'रिथ, तिथय पांठ्य छु भगवान् आत्म-देव तिज़गतस मंज़, म्वख-मालि मंज़, पन ज़न, व्याप-क-रूप-किन्य स्थ्ज़िथ ।

Just as, in the Egg of Brahman (in the Universe) the Ether permeates all the living beings, So also, does, the all powerful आत्मन्, pervade the whole world, as a peice of Thread is found running through the garland of pearls.



२८) यैव चित् गगनाभोग भूषणे व्योम्नि भास्करे ।
धराविवरकोणस्थे सैव चित् कीटकोदरे ॥

हिन्दी

समग्र आकाश के विस्तार को भूषित करने वाले भगवान् भास्कर में, जो चैतन्य व्याप्त है, वही चैतन्य पृथ्वी के छिद्र के गर्भ में पड़े हुए, एक सूक्ष्म कीड़े में भी वास करता है ।

कश्मीरी

आकाश-मण्डल-किस सॉरिसुय विस्तारस शोभाय-मान करनवॉलिस, सिर्य-भगवानस, मंज़, युस चैतन्य, निवास करान छु, सुय चैतन्य छु ज़मीनि-छिद्रिस ज़ॉविस मंज़ पेमुतिस अॅकिस मामूली क्यॉमिस मंज़ ति वास करान ।

The eternal life, that functions in the Sun, the ornament of the expansive skys, functions, in the same way, within a tiny insect, lying in the interior of the cavity of Earth.

२४) न बन्धोऽस्ति न मोक्षोऽस्ति ब्रह्मैवास्ति निरंतरम्।
नैकं अस्ति न चाऽद्वैतं संवित्स्फारा विजृम्भते ॥

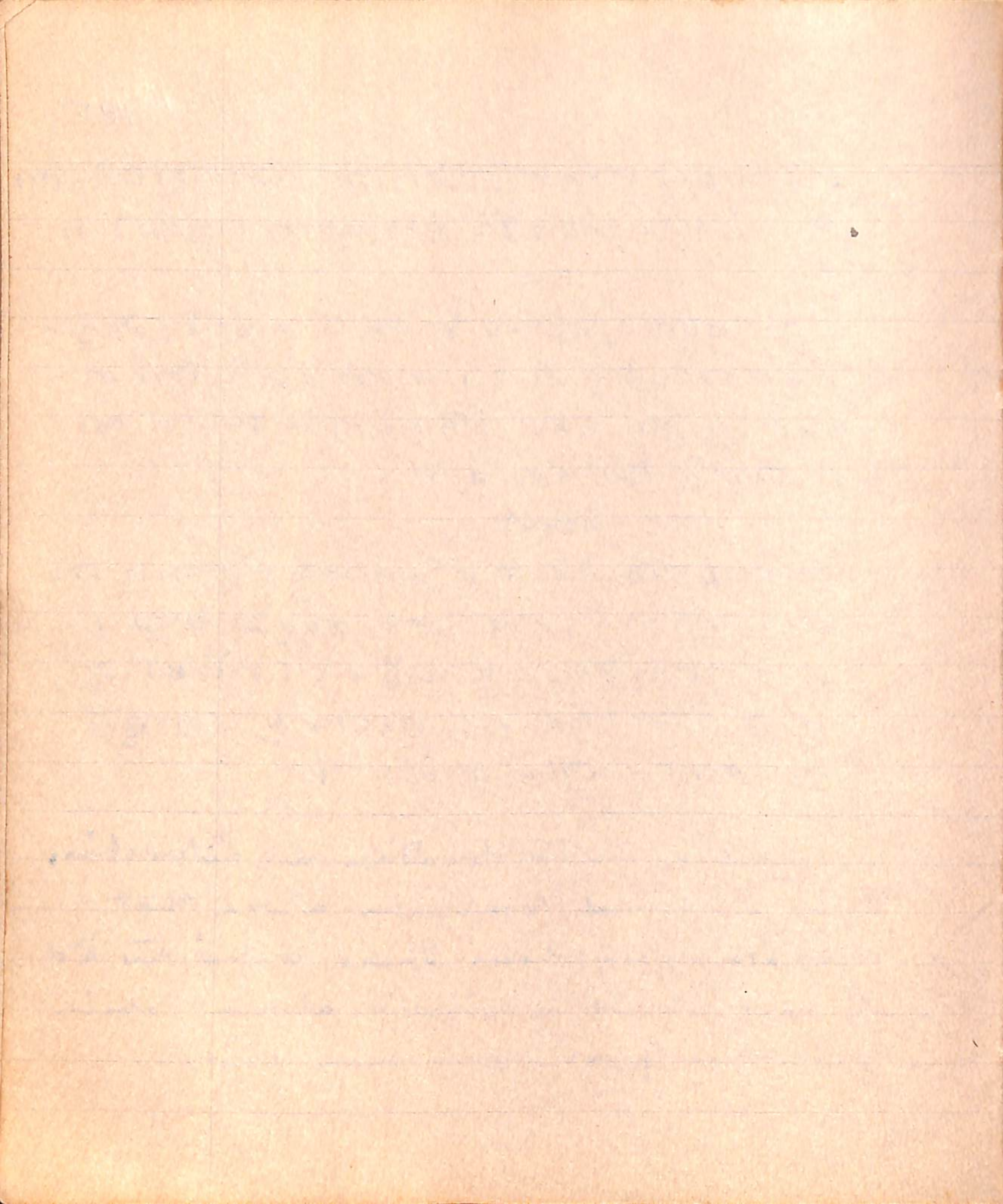
हिन्दी

इस संसार में न बन्ध है और न मोक्ष है; जो कुछ है वह केवल ब्रह्म ही है। न यहां द्वैत है और न अद्वैत है, यह केवल संवित्-देवी के स्फुरण का ही विलास और उल्लास है।

कश्मीरी

यथ संसारस मंज़ न छु बन्ध गछ़ुन त न छु मोक-लुन। यि केंछ़ा छु, सु छु केवल ब्रह्मय ब्रह्म। न छु यति द्वैत न छु अद्वैत। यि केंछ़ा छु, सु छु संवित्-देवी हुन्द स्फुरण त, उल्लासुय योत केवल - व्यापि त केंह।

There is neither bondage nor liberation. It is the Eternal Brahman alone that exists everywhere. There is neither द्वैत nor अद्वैत. It is Samvit alone which blooms forth far and wide.



३०) ब्रह्म चित्, ब्रह्म भुवनं, ब्रह्म भूतपरंपरा ।
ब्रह्माऽहं, ब्रह्म मत्-शत्रुः, ब्रह्म मत्-मित्र-बान्धवाः ॥

हिन्दी

यह चित् ब्रह्मरूप है; यह त्रिभुवन भी ब्रह्म रूप हैं; यह जीवों का अविरत स्रोत भी ब्रह्मरूप ही है; ब्रह्मरूप मैं भी हूं, मेरा शत्रु भी ब्रह्मरूप है, तथा मेरे मित्र और बन्धु भी ब्रह्मरूप ही हैं ।

कश्मीरी

यि च्यथ छु ब्रह्म-स्वरूपुय; यिम त्रे भुवन ति छि ब्रह्मुय; यि जीवसृष्टि ति छह ब्रह्म-स्वरूप । ब्रह्मुय छुस बॅ ति, ब्रह्मुय छु म्योन शॅत्रुर; ब्रह्मुय छि म्यॉन्य बन्धु त बान्धव ।

Brahman is the same as चित् - consciousness. It constitutes the three worlds; Brahman is also this stream of creation: I am Brahman. My enemies, friends and relations are also same as Brahman.

* It is Samvit alone, which, in its ~~natural form~~ inherent nature, functions everywhere.
The notion ~~of~~ the existence of ज्ञाता & ज्ञेय as separate from each other is all unreal.



३२) यदस्ति यत् भाति तत्-आत्मरूपं,
यत् चाऽन्यतो भाति, न चाऽन्यत् अस्ति।
स्वभाव-संवित् प्रतिभाति केवला,
ग्राह्यं ग्रहीतेति मृषा विमर्शः॥

हिन्दी

जो कुछ भी संसार में विद्यमान है अथवा भासता है, वह आत्मरूप है; जो कुछ आत्मा से भिन्न दीखता है, वह भी इस से वस्तुतः अभिन्न है। यहां तो केवल एक संवित् का ही निर्मलरूप से सर्वत्र उल्लास है। ज्ञाता-ज्ञेय की भावनाएं जो हैं, वह मिथ्या विकल्प हैं।

कश्मीरी

यि केंह संसारस मंज़ छु या भासान छु सु छु आत्म-रूप। यि केंह आत्माह निशि भिन्न छु भासान सुति छु वस्तुतः आत्माह निशि अभिन्नुय। यीति छि केवल संवित्-देवी रूपुय निर्मल भाव-किन्य उल्लसित सर्वदिश चमकान। ज्ञाता तु ज्ञेयिचि भावनायि यिम छि, तिम सॉरी मिथ्या तु अपुज़ु।

Whatever there exists or seems to exist, that all is of the form of Atman; whatever exists other than that, that also is of the nature of Atman ...

Chapter X.

(Salvation - मुक्ति)

Vasishtha says - वशिष्ठ जी कहते हैं :-

२) स्वप्नेन्द्रजालवत् पश्य दिनानि त्रीणि पंच वा।
मित्र-क्षेत्र-धनागार-दार-दायाद-संपदः॥

हिन्दी

हे राम, मित्रों को, धन-दौलत को, तथा ज़मीन, स्त्री और संपत्ति को, तुम, अचिरस्थायी समझो। इन की बहार दो-चार दिनों तक ही रहने वाली है। यह सारे पदार्थ स्वप्न-समान हैं या किसी जादू के खेल के बराबर। इन पर तुम विश्वास न रखो।

कश्मीरी।

हे राम, ज़मीन, घर-बार, यार दोस्त, ज़नान, शुर्य, बन्द तु बान्धव — यिम ज़ानुख ज़ि यिम छिनु ज़्यादस समयस रोज़न वाल्य। यिहुन्द बहार छु केवल त्रेन च़ोरन दोहन रोज़ान। यिम छि स्वप्न-तुल्य, या बाज़ीगर-सुन्द़ खेला हिश। यिमन प्यठ पज़ि नु च्रे विश्वास करुन।

Consider, O. Ram, all your friends, lands, wealth, wife, sons and kith & kin, as unreal, as a dream or a magical show ~~as as if they were seen in a dream~~, and as lasting ~~only~~ only for a few days/- says three or four days, and not more.

२) तृष्णामात्रात्मको बन्धः तन्-नाशो मोक्ष उच्यते ।
भवाऽसंसक्तिमात्रेण प्राप्तितुष्टिर्मुहुः मुहुः ॥

हिन्दी

जब तक तृष्णाएं तुम्हारे दिल में ज़िन्दा हैं, तब तक यही समझो कि तुम बन्धन में पड़े हो। उनके नाश होने ~~से~~ पर ही तुम अपने को मुक्त जान लो। निर्लिप्त-भाव से व्यवहार करने पर ही तुम संतुष्ट होगे।

कश्मीरी

चु छुख तनुयताम बन्धः, युताम च्यँ तिम दिलस मंज़, तृष्णायि छु कँरिथ रोज़न। यलि छिमु गलन, त्यलि ज़ान ज़ि चु म्वकलयोख। संसारकिस व्यवहारस मंज़ थव निर्लिप्तता। अदु, मालि, प्रावख मनुक संतोष।

It is cravings & desires alone, that cause bondage. Renounce them & you will find yourself at the door of salvation. Cultivate a habit of detachment for worldly dealings & try to be contented more & more.

2) दृश्य-दर्शन संबन्धे सुखसंवित् अनुत्तमा ।
दृश्य संवलितो बन्धः, तन्मुक्त्या मुक्तिरुच्यते ॥

हिन्दी

दृश्य जगत् के साथ, ज्ञानेन्द्रियों के संपर्क हो जाने पर, एक अपूर्व सुख का अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन दृश्यसुख के खुशगवार तारों की लपट में आकर ही जीव बन्धनों में फंस जाता है। उन से छूट जाए तो 'मुक्त' की संज्ञा से कहलाएगा।

कश्मीरी ।

ज्ञानेन्द्रियन, यलि पनन्यन विषयन सूत्य, म्युल सपदान छु, त्यलि, अख ज़ीवस, अपूर्व सुखुच, उपलब्धि सपदान । लेकिन संसारकयन मेछल तारन मंज़ फटिथ छु ज़ीव बन्द गछान । यलि यिमन तारन निशि आज़ाद गछि, त्यली वनान स मुक्त योमुत ।

As a result of our attachment with the various sense-objects, there arises ~~an intense joy~~ That supreme bliss, which thrills us. But the curse is, that jiva, entangled by these sweet threads of pleasures falls into bondage, when released from these snares, he is known as <u>mukta</u> (released).

४) प्रौढं सदसतोर्मध्ये पदं लब्ध्वाऽवलम्ब्य तत्।
सबाह्याभ्यन्तरं विश्वं मा गृहाण विमुञ्च मा॥

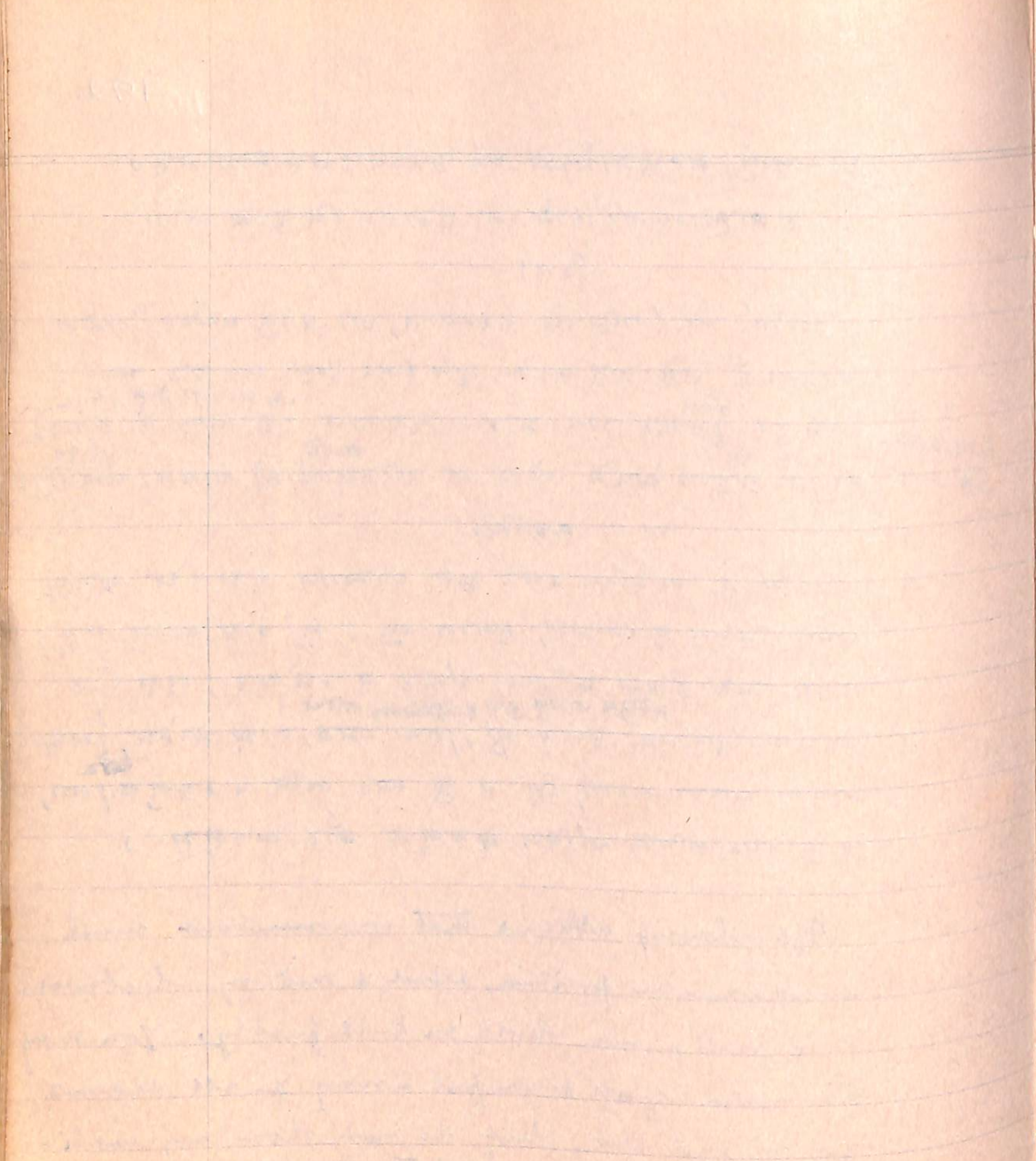
हिन्दी

'अस्ति' और 'नास्ति' के दरम्यान, जो प्रौढ़ अर्थात् निश्चल अवस्था है, उसे प्राप्त करके, तुम फिर उसी पर डट कर रहते हुए, और अन्दर और बाहर दृश्यमान इस विश्व के प्रपंच का जाइज़ा लेते हुए / देखते हुए, उसे / उस पर न ग्रहण करने और न परित्याग करने की भावना करो।

कश्मीरी

'अस्ति' तु 'नास्ति' — यिमन द्वन दरम्यान युस छि, प्रौढ़ अर्थात् स्थिर तु निश्चल, स्थान छु, सु प्राप्त करनु पतु, तॅथ्य प्यठ डॅटिथ रूज़िथ, अन्दर तु न्यॆबर, युस छि दृश्यमान जगतुक प्रपंच छु, तम्युक जायज़ ह्यथ, करिथ / तथ प्यठ, नज़र त्रॉविथ, यिह भावना धारणा करुन्य, ज़ि न छु म्यॆ अमिकि रटनुक कांह / शौक, न छु म्यॆ अमिकि त्रॉविथ छुनुनुक कांह अफसूस।

After having attained that transcendent and unshakeable position, which is midway between 'is' & 'is not', you hold on to it fastly. You may then make a full & careful survey of all around you in and out, but do not show any inclination to accept or reject the same.



५). जडाजडदृशोर्मध्ये यत् तत्त्वं पारमार्थिकम्।
अनन्ताकाशहृदयं मा गृहाण विमुञ्च मा ॥

हिन्दी

जड विषयक चिन्तन और अजड विषयक चिन्तन के मध्यवर्ती जो पारमार्थिक तत्त्व है इस विस्तीर्ण अनन्ताकाश का सार-रूप है, उस की जानकारी के बाद, तुम उदासीनवत् आचरण करते रहो अर्थात् न उसके ग्रहण करने अथवा त्यागने की भावना मन में धारण करो।

कश्मीरी

जड तु अजड, मिथुन द्वन पथ, चिन्तन करान करान, मँज़-बागस, युस छु परमार्थ तत्त्व, यथि विस्तीर्ण आकाशुक सार-रूप ज़ानरव ~~[illegible]~~, तमिचि ज़ांन्य मंज़ गछि चोन उदासीनवत् आचरण करान, अथीत् न गछि योन तथ ग्रह-बूल करुन न गछि त्रांविथ छुनुन।

You may neither entertain or reject that fundamental truth – the vital part of this limitless ether, which you may come to realise as existing midway between the matter & the spirit.



English :-

6) The very acceptance of the Existence of the दृश्य i.e. the world, on part of the द्रष्टा i.e. the jivatman ~~Atman~~, causes the latter's bondage. The jivatman falls into bondage simply because of his contact with the worldly objects. He feels liberated only at the disappearance of the same.

६) द्रष्टुर्दृश्यस्य सत्ताऽङ्गं, बन्ध इत्यभिधीयते ।
द्रष्टा दृश्यवशात् बद्धो दृश्याभावे विमुच्यते ॥

हिन्दी

हे राम! द्रष्टा का जो दृश्य के अस्तित्व का अंगीकार करना है, वही उस को बन्धन में बान्धने वाला बन्ध है। दृश्य के वशीभूत होकर ही, जो द्रष्टा बन्धन को स्वीकार करता है, वही दृश्य के आकर्षण से दूर रहकर मुक्त हो जाता है।

कश्मीरी

ही रामि, युस यि जीव छुस, दृश्य जगतुक अस्तित्वुक स्वीकार करान छु, सुय छु तमिस बन्धनुक बनान। दृश्यस वशीभूत सपदिथ्य, युस यि द्रष्टा-जीव, बन्धनस स्वीकार करान छु, सुय छु पानस आज़ाद मनान, यलि तमिस दृश्युक आकर्षण ख़त्म गछि।

* O Rama! the ~~blooming forth~~ very acceptance of the existence of the sense-objects by the द्रष्टा ~~p leaning~~ him ~~(the enjoyer~~ द्रष्टा जीव) ~~under their influence~~, goes by the name of bondage; this in other words means, that द्रष्टा or जीव, falls into bondage simply because of the दृश्य, and feels liberated only, at the disappearance of the same.

७) द्रष्टृ-दर्शन-दृश्यानि त्यक्त्वा, वासनया सह।
दर्शनं प्रथमाभासं आत्मानं समुपास्महे ॥

हिन्दी

द्रष्टा, दर्शन और दृश्य- इन सब के अस्तित्व को भूल कर, एवं वासना (अहन्ता) को भी छोड़कर, तद-नन्तर, सब से पहिले, जो, साधक को, एक उत्कृष्ट अनुभव परमार्थ दर्शन का होता है, वही आत्मानुभव है, और हमें उसी आत्मदेव की उपासना करनी चाहिए।

कश्मीरी।

ज्ञाता, ज्ञान तु ज्ञेय- यिम त्रेशिवय त्राविथ, ब्योयि यिमनुय सूत्य अहन्तायि ति दकु कॅरिथ, तव-पतु युस अमि परमार्थ-दर्शनुक उत्कृष्ट अनुभव हासिल सपदान छु, सुय गव आत्मदर्शन। अँस्य करव तमिसुय आत्मदेवुन्य उपासना ॥

After having ignored, besides vāsanā (अहन्ता), the existence of the ~~seer or~~ Experiencer, the Experiencing and the Experienced, the foremost Experience which confronts us, is that of the Ātman (आत्मदर्शन), who, thereafter, becomes the object of our Worship.

८) द्वयोः मध्यगतं नित्यं अस्ति-नास्तीति पक्षयोः ।
प्रकाशकं प्रकाशानां आत्मानं समुपास्महे ॥

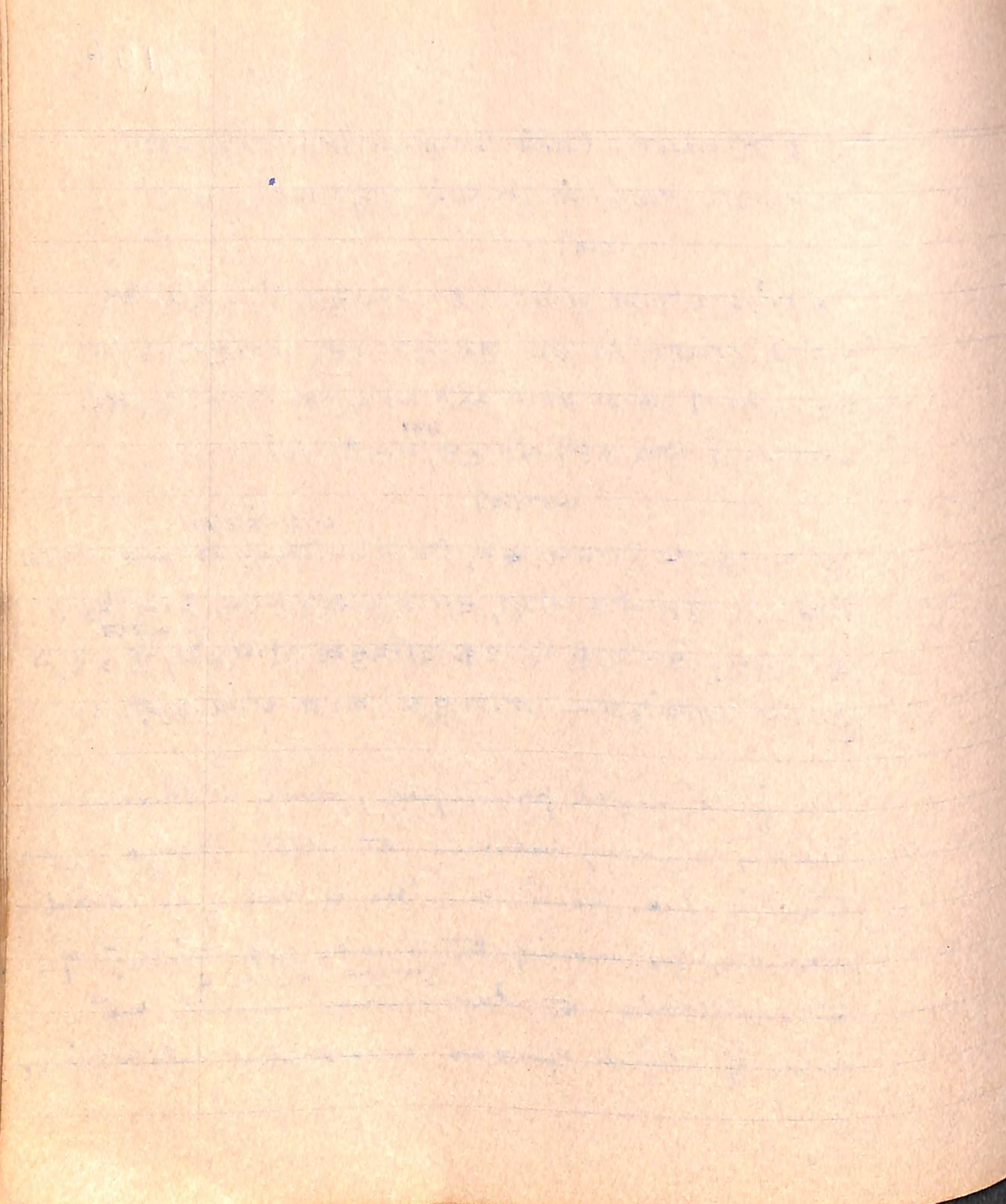
हिन्दी

'अस्ति' और 'नास्ति' अर्थात् 'है' और 'है नहीं' — इन दो पक्षों के दरम्यान जो कुछ सनातन वस्तु अवस्थित है, जो प्रकाश को भी प्रकाश प्रदान करने की क्षमता रखती है, वही आत्मदेव है और उसी की हम एका वन्दना करें ।

कश्मीरी

'छु' त 'छु नु' - यिमन दुन, चिन्तन- ~~[illegible]~~ धारा-हेंदयन पक्षन, मंज़ुमान, युस काँह चीज़ा, सनातन-रूपकिन्य अवस्थित छु, युस, प्रकाशस ति प्रकाशादिनुक सामर्थ्य थवान छु, सुय छु यि आत्मदेव — त'मिस सुय करव असि पूज़ा ॥

The fundamental principle, which is Eternally existing midway between the two ways of our thinking i.e. 'He is' and 'He is not', is called Ātman, possessing the innate capability of illuminating the luminaries ~~and~~ (as such ~~thus~~ he is) the sole ~~of~~ object of our worship & meditation.



४) निद्रादौ जागरस्यान्ते यो भाव उपजायते ।
तं भावं भावयन् साक्षात् अक्षय्याऽऽनन्दं अश्नुते ॥

हिन्दी

नींद के आरंभ पर, तथा नींद को छोड़ने के बाद, जो भाव, एक आत्मज्ञ पुरुष के मन में उत्पन्न हो जाता है, उसी भाव पर मनन करनेवाला वह पुरुष साक्षात् उस आनन्द को प्राप्त करता है जो कभी क्षय को प्राप्त होता नहीं ।

कश्मीरी

श्वंगनुविज़ तु श्वंगनु पतु व्वथिथ, युस भाव अ'किस आत्मज्ञ पुरुष-सं'दिस मनस मंज़ उत्पन्न छु सपदान, त'म्य भावस प्यठ मनन-चिन्तन करन वा'लिस, ता'म्य पुरुषस छु, साक्षात्, सु आनन्द, प्राप्त सपदान, युस, न ज़ाँह ति, नाशस छु, प्राप्त गछान ।

A seeker after Truth, actually attains undimmed bliss, while absorbed in pondering over that state of mind, which he experiences in the beginning of going to sleep or that (state) which presents itself to him at the end of the waking one.

२०) प्रशान्त सर्व संकल्पा या शिलावत् अवस्थितिः।
जाग्रत्-निद्रा-विनिर्मुक्ता, सा स्वरूपस्थितिः परा॥

हिन्दी

उस परम उत्कृष्ट अवस्था को 'स्वरूप-स्थिति' की संज्ञा से पुकारते हैं; जिस में सारे संकल्प प्रशान्त होगए हों, जिस में शिला की जैसी स्थिति का एक निस्पन्द अनुभव करे, और जो ~~न~~ जाग्रत् अवस्था और ~~न~~ निद्रा की अवस्था से अप्रभावित रहे।

कश्मीरी

स्वय गयि स्यठा थँज़ दशा यथ 'स्वरूपस्थिति' वनान छि, यथ मंज़ संकल्प आदि, आसन, सॉरी मिटे मुत्य; यथ-मंज़, आत्मस, कनि-हुंज़ हिश, स्थिति, अनुभव करि; ब्यायि यथ मंज़ न जाग्रत, त न निद्राहि हुंज़ दशा असर सपदि।

That stone-like still condition, wherein all thoughts cease to function, which remains unaffected during the sleeping and waking states, is called the highest spiritual experience i.e. स्वरूपस्थिति, the peaceful vision of one's own self.

(११) जडतां वर्जयित्वैकां शिलायाः हृदयं च यत्।
अमनस्कं महाबाहो! तन्मयो भव सर्वदा॥

(हिन्दी)

शिला की सारभूत, अर्थात् नैसर्गिक, गुणरूप, जडता को ग्रहण न किए हुए, अर्थात् अपने को शिला की तरह निश्चेष्ट प्रदर्शित करते हुए भी, परन्तु आन्तरिक व्यापार से निवृत्त न होता हुआ, हे महाबाहु! अपने मन से संकल्पों को निकाल कर अर्थात् निर्विकल्प होकर, सदा तन्मय हो जाओ।

काश्मीरी

कनि हंन्ज़ ज़ाती जडता न रॅटिथ अर्थात् न्यॅबर्य किन्य कनि हंन्दय पॉठ्य बेहरकत ब़ॅज़िथ ति, मगर पननि मनुकि व्यवहार-निश्चि पथ न अॅचिथ, हे राम!, चू वन निर्वि-कल्प ब़ॅनिथ कर आत्म-मन्थन अर्थात् [illegible] [illegible] [illegible]
[लगनु हन।

Having taken out all that ~~dullness~~ inertia from within your self, which is not less than the dullness of a stone, you, O mighty armed one, be unmindful of the outer world and behave alertedly or finally absorbed in the fundamental unity.

२२) नित्यानन्दः चिदाकाशस्वरूपः परमेश्वरः।
मृद्-भाजनेषु मृद् इव, सर्वत्राऽस्ति पृथक् स्थितः॥

हिन्दी

परमेश्वर परब्रह्म सदा आनन्दस्वरूप है। वह चिदा-काशरूप है। वह सर्वत्र व्याप्त होकर भी ऐसा दीखता है जैसे नामरूपमय सृष्टि से कोई पृथक् वस्तु है, जैसे मिट्टी नानाप्रकार बर्तनों में अलग अलग दीखती हुई भी, नाना नामरूपों से अप्रभावित होकर एक ही मिट्टी है।

कश्मीरी

परमेश्वर छु शाश्वत-आनन्द-मय, बल्कि छु चिदाका-शस् सुं सर्वगत; यिथ् पॉठ्य म्यच़ि-बानन मंज़ छि म्यॅच़ अकॉय/ आॅसिथ नु सारिनुय बानन मंज़ व्यापक, अम्मा अलग २ बानन मंज़ छि सह अलग ति बोज़नु यिवान।

Paramashwara is ever joyful and omni-present, like life (चित्) and Ether (आकाश). Although apparently existing separately He is omnipresent, like Earth in the Earthen vessels of different shapes.

(13)

* The Atman, having inseparably united itself with the Ocean of consciousness, blooms forth, during His sweet will, in this vast Universe, wherein seem to rise manifold experiences in the form of ebbing & rising waves, dashing and dancing around us.

13) अपारावार (संसार) संवित्-सलिल-वल्गनैः ।
चित्-एकार्णव एवाऽयं स्वयं आत्मा विजृम्भते ॥

हिन्दी

इस अनन्त संसार की अनुभूति के / (यों उठते गिरते) जल तरंगों ~~के उतार चढ़ाव~~ को नाना रूपों में प्रदर्शन का भास दिलाती हुई, चैतन्य-समुद्र से एकीभूत, यह आत्मा, (संसार में) स्वयं भिन्न भिन्न नामरूपों में उल्लसित हो रही है ।

काश्मीरी

यथ अनन्त संसारचि अनुभूति हंन्यन / (खसवुन्यन तु वसवुन्यन) जल तरंग~~न~~न ~~उतार चढ़ाव~~, नाना प्रकार्य, प्रदर्शनुक भास दिथ, चैतन्य-समुद्रस सूत्य कनुय कनेभुत, पानय, पु. अकोय आत्मा, अन्दर तु न्यबर, ब्योन २ नाम-रूप्प ओरिथ, उल्लासस मंज़ यिथ. चवा तरफ चमकान ।

※ The Atman, - / (having united itself with) the ocean of Consciousness, ~~alone~~ blooms forth, of its own accord, ~~in the state~~ of the unlimited (expanse of Universe) ~~ocean of consciousness~~, wherein ~~two~~ seem to ~~take shape~~ (rise) manifold (experiences in the form of ebbing & flowing waves) ~~aspects of various forms & names~~.

२८) अखिलक्षोभ-दिक्-कुंजं अनन्ताकाशनिर्भरम् ।
एकं वस्तु जगत् सर्वं चिन्मात्रं वारिवाऽम्बुधिः ॥

हिन्दी

जैसे समुद्र जल के सिवाय और कुछ नहीं उसी तरह, यह सारा जगत, वह चिन्मात्र के सिवा और कुछ नहीं। ~~कि~~ जिस चिन्मात्र हुआ है, यह सारी दिशाएं व्याप्त होकर, अन्तहीन आकाश भी समाया हुआ है।

कश्मीरी

यिथ-पाठ्य समुद्र/जल- बगैर बाकि केंह छुन, तिथय पाठ्य यि जगत् ति छु चिन्मात्रस बगैर बाकि केंह छुन। युस चिन्मात्र सर्वगत छु अर्थात् यैम्य सार्यय दिशायि व्याप्तिथ ~~छु, बाकि छुन~~ आकाशस ति व्योलमुत छुन।

As the ocean is nothing but water alone, so the world is nothing but चित् alone, which, besides filling the whole host of quarters, ~~and~~ pervades the infinite sky.

२५) निरंशत्वात् विभुत्वात् च, तथाऽनश्वरभावतः ।
ब्रह्म-व्योम्नोः न भेदोऽस्ति चैतन्यं ब्रह्मणोऽधिकम् ॥

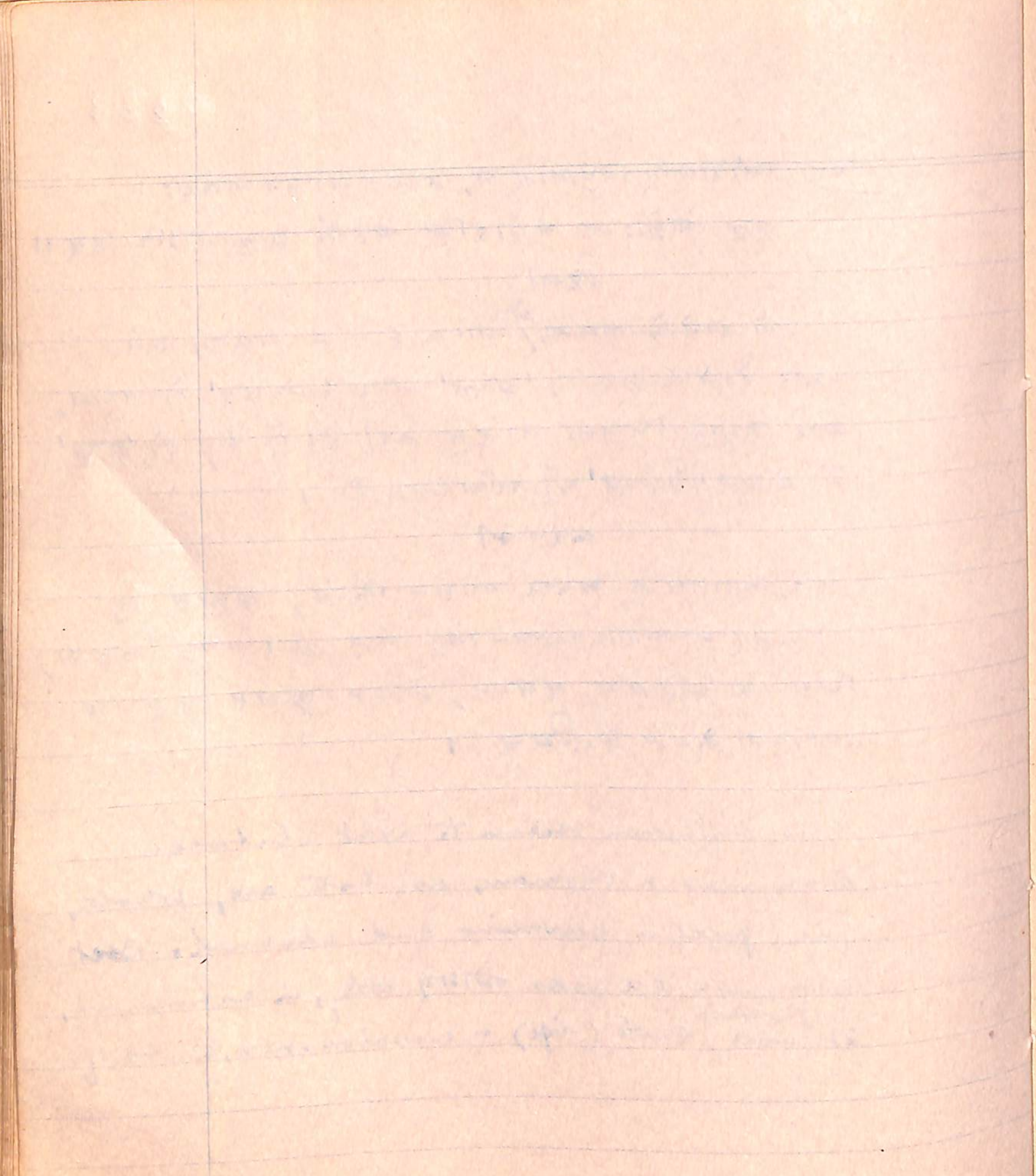
हिन्दी

पूर्ण ~~होने के कारण~~, और व्यापक होने के कारण, एवं अनश्वर होने के कारण, 'ब्रह्म' और 'व्योमन्' के मध्य, कोई विशेष भिन्नता मालूम नहीं होती है; हां, 'ब्रह्म' में केवल 'चैतन्य' की अधिकता है ।

कश्मीरी

पूर्ण, व्यापक तु अनश्वर आसनु किन्य, ब्रह्मस तु व्योमस (आकाश-शून्य-खं) मंज़ छन काँह भिन्नता, यिम छि दुशिवय समान, लेकिन ब्रह्मस मंज़ छि अधिकता केवल चैतन्यच ।

No difference seems to exist between Brahman & Vyoman, as both are, whole, full, partless, pervasive and eternal. ~~But~~ Brahman exceeds व्योमन् ~~only~~, in as much as, it ~~has~~ Embodies चैतन्यं (life) or consciousness, in itself.



१६) निस्तरंगोऽतिगंभीरः सान्द्रानन्दसुधार्णवः।
माधुर्यैकरसाधार एक एवाऽस्ति सर्वतः॥

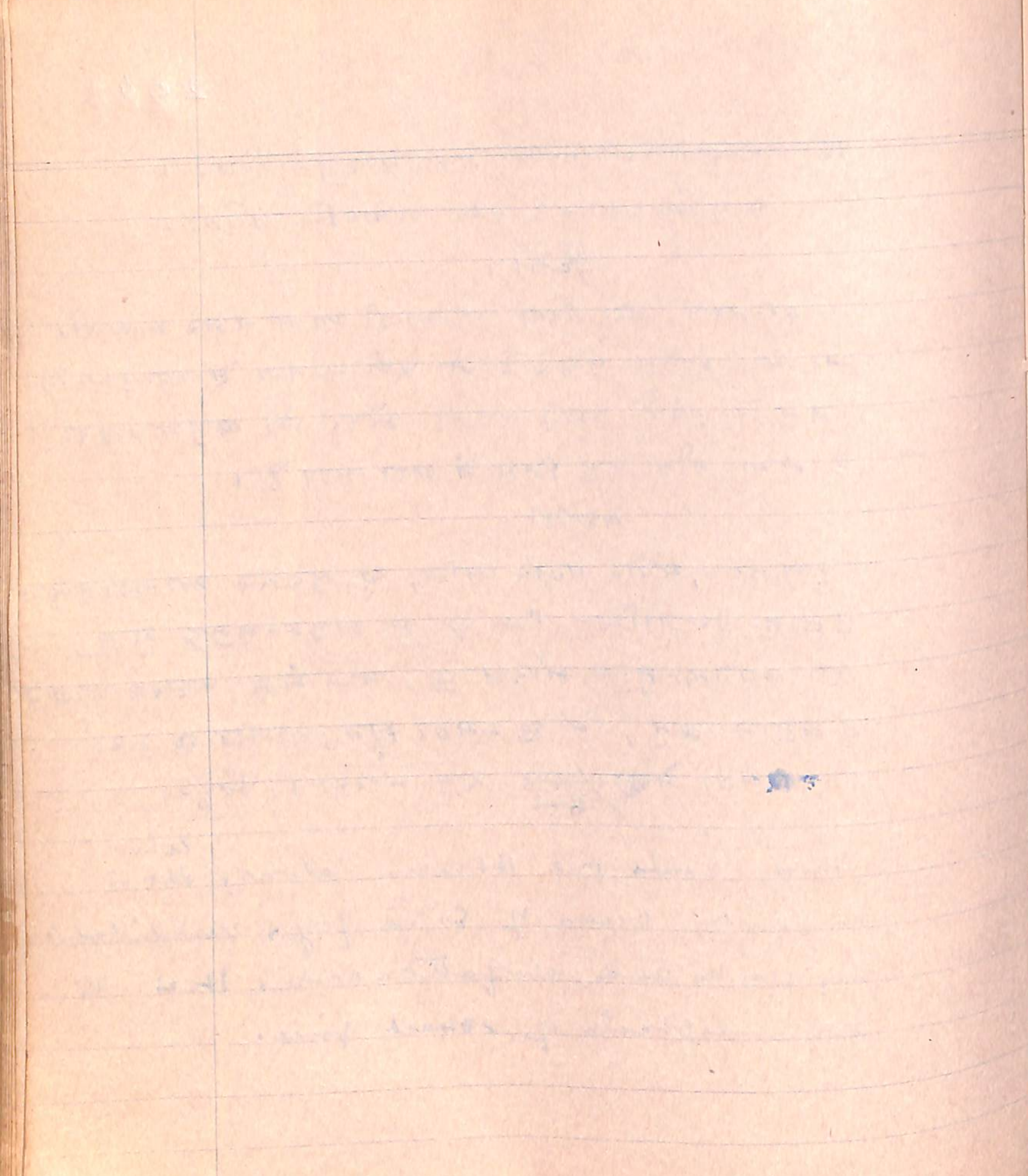
हिन्दी

हर तरफ, जहां देखो आत्मा ही आत्मा नज़र आएगी। यह वह अमृत-समुद्र है जो पूर्ण आनन्द से भरा हुआ है। जिस में तरंगें नहीं उठतीं और जो बहुत गहरा है तथा मीठा रस जिस में भरा पड़ा है।

कश्मीरी

चुनु तरफ, यपोर नज़र दिलि, चे गछ्रव आत्माहुय वुछास प्रथजायि- यि छु सु अमृत-समुद्र युस पूर्ण आनन्द-सुत्य बॅरिथ छु, यथ मँज़ गलरव खवान नु वहान छॅन, यि छु स्यठा ह्रुन, वयथि छु अथ मँज़ स्यठा ~~[illegible]~~ मुदुर रस बॅरिथ। (म्वदुर)

There exists one Atman alone, ~~He~~ who is the milky ocean of solid joy, unagitated by waves and unfathomable. He is the only receptacle of sweet juice.



२७) समस्तं खल्विदं ब्रह्म, सर्वमात्मेदमाततम् ।
अहं अन्यः इदं अन्यत् इत्यऽखण्डं न खण्डय ॥

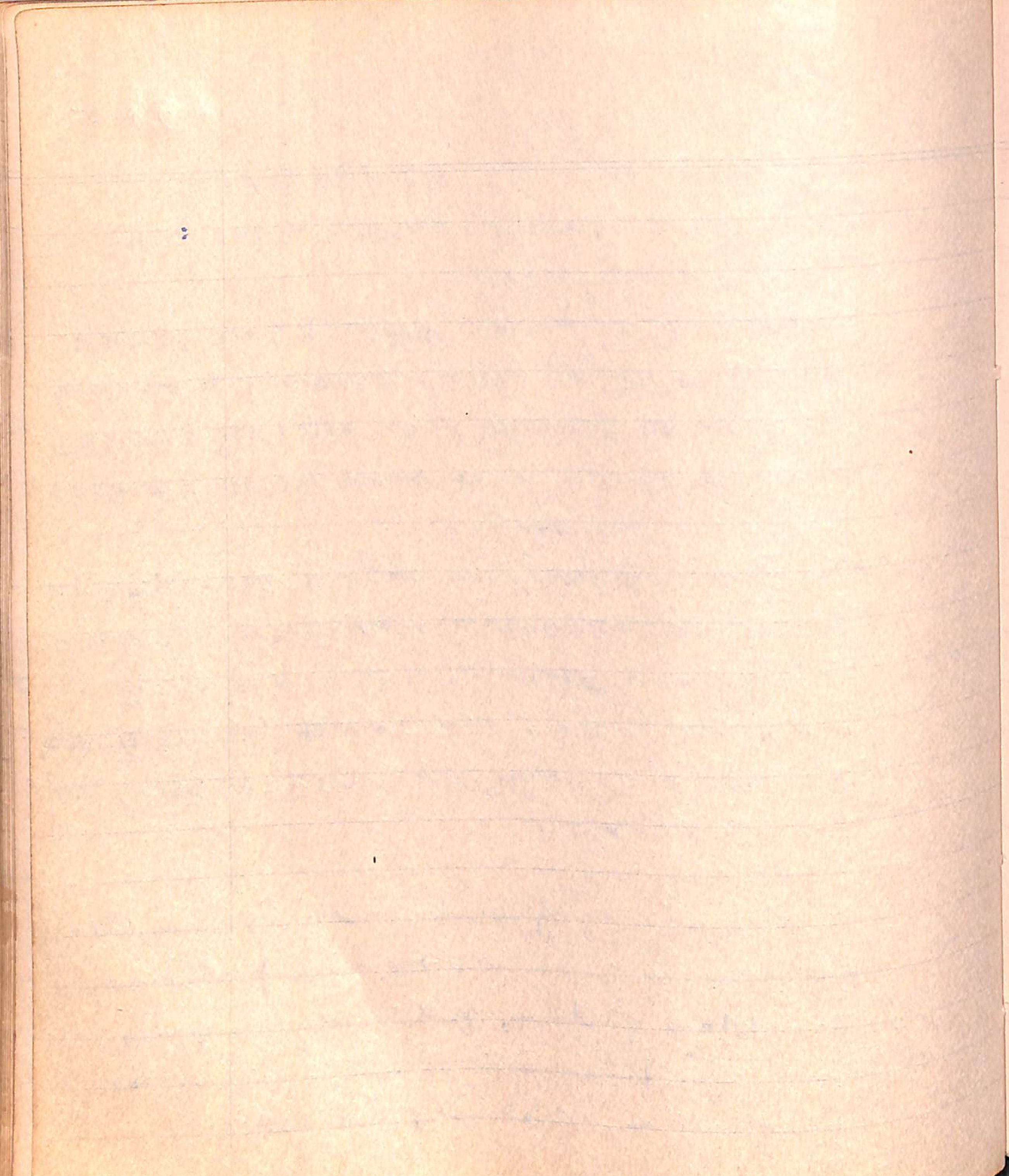
हिन्दी

निश्चितरूप से यह सारा विश्व ब्रह्मरूप है । यह दृश्यमान जगत्-प्रपंच उसी का विस्तार-फैलाव है । मैं एक पृथक् वस्तु हूं और यह दृश्य जगत् भी एक अलग वस्तु है — इस प्रकार की गलत दृष्टि से इस अखण्ड को खण्डित न करो ।

कश्मीरी ।

यि छोरुय छु ब्रह्मस्वरूप, यथ सॉरिसुय दृश्य-प्रपंचस मंज़ छु केवल तमिसुय ब्रह्मरूप आत्मा-सुन्दुय फहलाव । बह छुस अलग कुनाम चीज़ा तु यि ज़गत् ति छु कुनाम अलग चीज़ा — अमि प्रकारुकि मिथ्यादृष्टि-हन्दि विचार किन्य प्रभावित सपदिथ, यथ अखंडस (पूर्णब्रह्मस) मत् करत् खंडित-खंडित ।

This all is verily Brahman or Atman, Expanded all around. Do not partition Him who is partless, full and compact, under this false notion, that He and the world are distinct & seperate.



२८) यदेव ब्रह्मणो रूपं ततं शुद्धं अखण्डितम् ।
ज्ञात्वा तत्, तीर्णसंसार: परमेश्वरतां गतः ॥

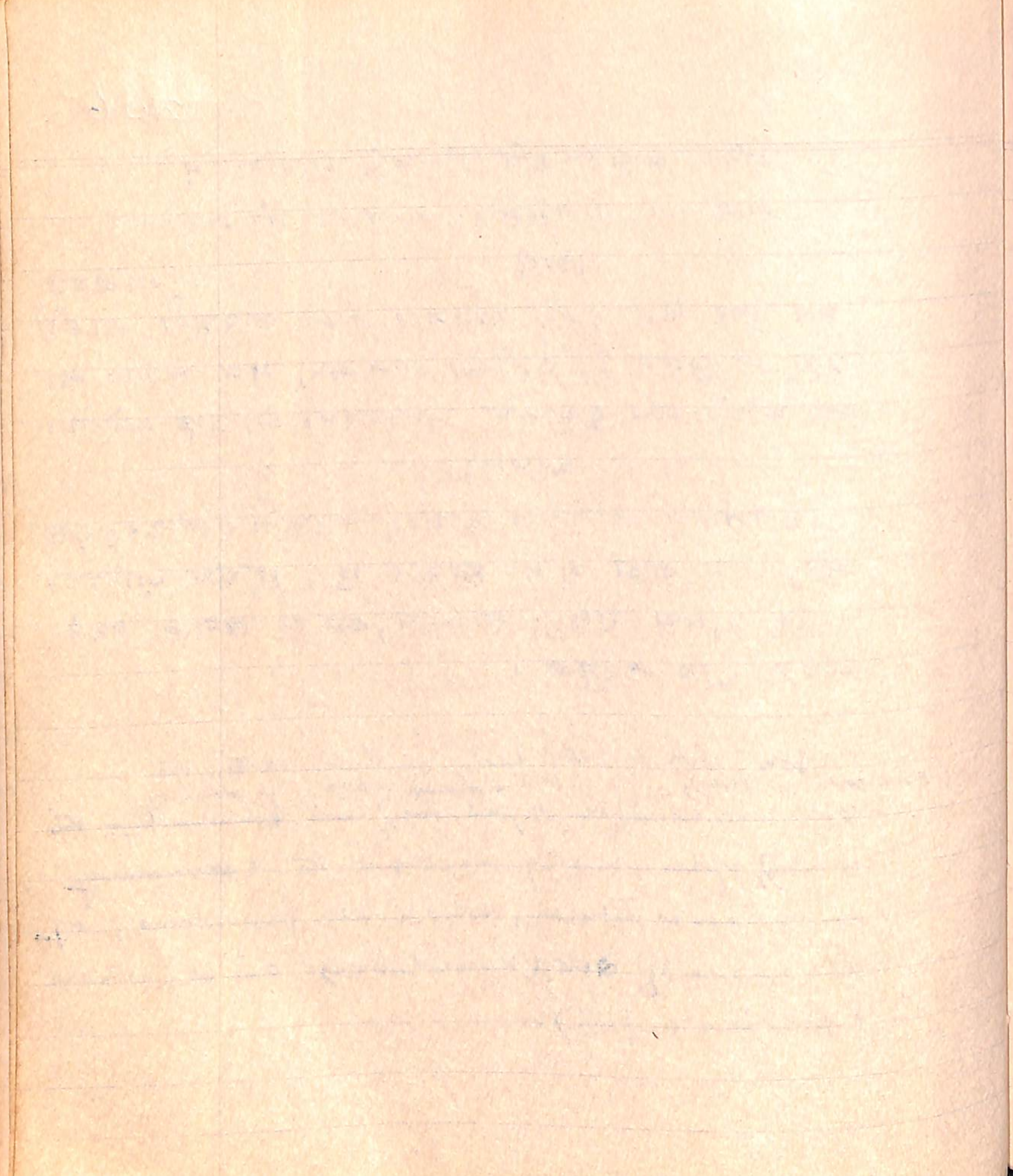
हिन्दी

यह केवल सब जगह फैला हुआ, ज्ञानमय तथा परिपूर्ण जो है, ब्रह्म का स्वरूप है, उसी को जान कर, तुम संसार को पार करोगे और ब्रह्मरूप परमेश्वरता को प्राप्त करोगे।

कश्मीरी

सर्वगत तु ज्ञानमय त्यथि परिपूर्ण (खंडरनु रुस) युस यि ब्रह्म-सुन्द स्वरूप छु, सु यिय ज़ानिथ, तरख, चु, यथ संसार-सागरस, त्यथि बनख परमे-श्वरस स्वरूप तद्रूप ।

You will really feel united with the (one with परमेश्वर), Supreme Lord, and ~~alone~~ cross this ocean of ~~plane (of this~~ world); after having realised the ~~essence of~~ Brahman or Ātman, who is all pervasive, of the nature of बोध (knowledge) and whole (partless & full).



(१५) समस्तं एव ब्रह्मेति भावितं ब्रह्म वै पुमान्।
पीतेऽ मृतेऽमृतमयः को नाम न भविष्यति ॥

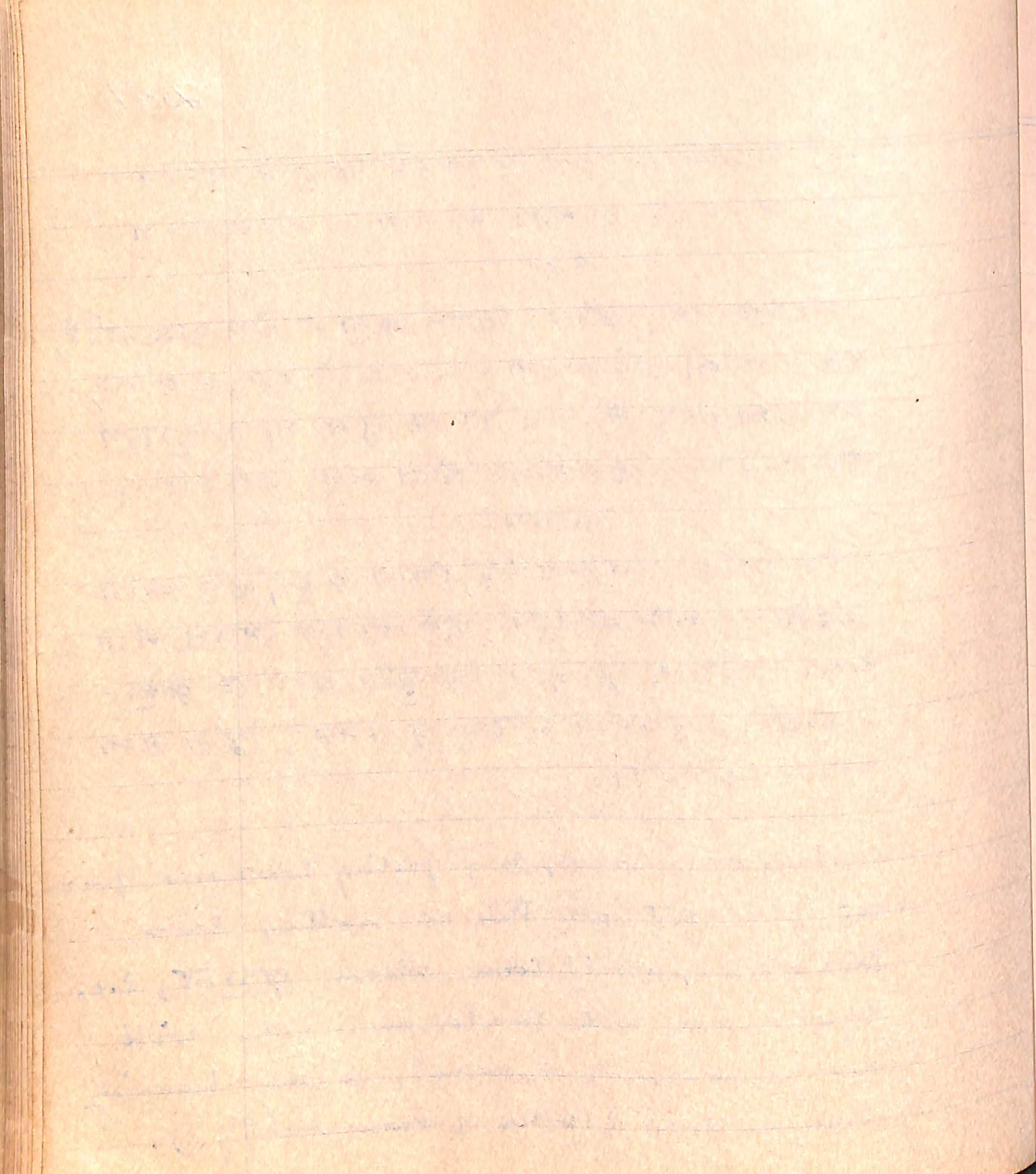
हिन्दी

यह सब जगत्-प्रपंच सिवाय ब्रह्म के और कुछ नहीं है, इस प्रकार की पूर्ण भावना धारण करते हुए, तुम भी, यह निश्चयरूप से जान लो कि तुम भी ब्रह्मरूप होगए हो। अमृत पीकर कौन अमर नहीं होगा?।

कश्मीरी।

यि होस्‌य जगत्-प्रपंच, सिवा ब्रह्म, कुन्‌ व्यथ छेंह्‌ति — अमि प्रकारुच पूर्ण भावना मनस मंज़ धारण कौरिथ, छ्‌ ज़ान, ज़ि छुति बन्योमुत ब्रह्म-स्वरूप। अमृत-पान कौरिथ, छ्‌ वनतु, कुस सना बनि नु अमर?।

Any one, when, being fully convinced of the fact that all this is nothing save Brahman, would soon attain ब्रह्मत्व, i.e. become one with Brahman. Who will not become immortal, after having drunk अमृतं? (water of immortality).



20) मुक्त्याऽभिमानो मोक्षेऽपि, देहेऽपि ममता तथा।
न च योगी न च ज्ञानी, केवलं दुःखभाक् असौ॥

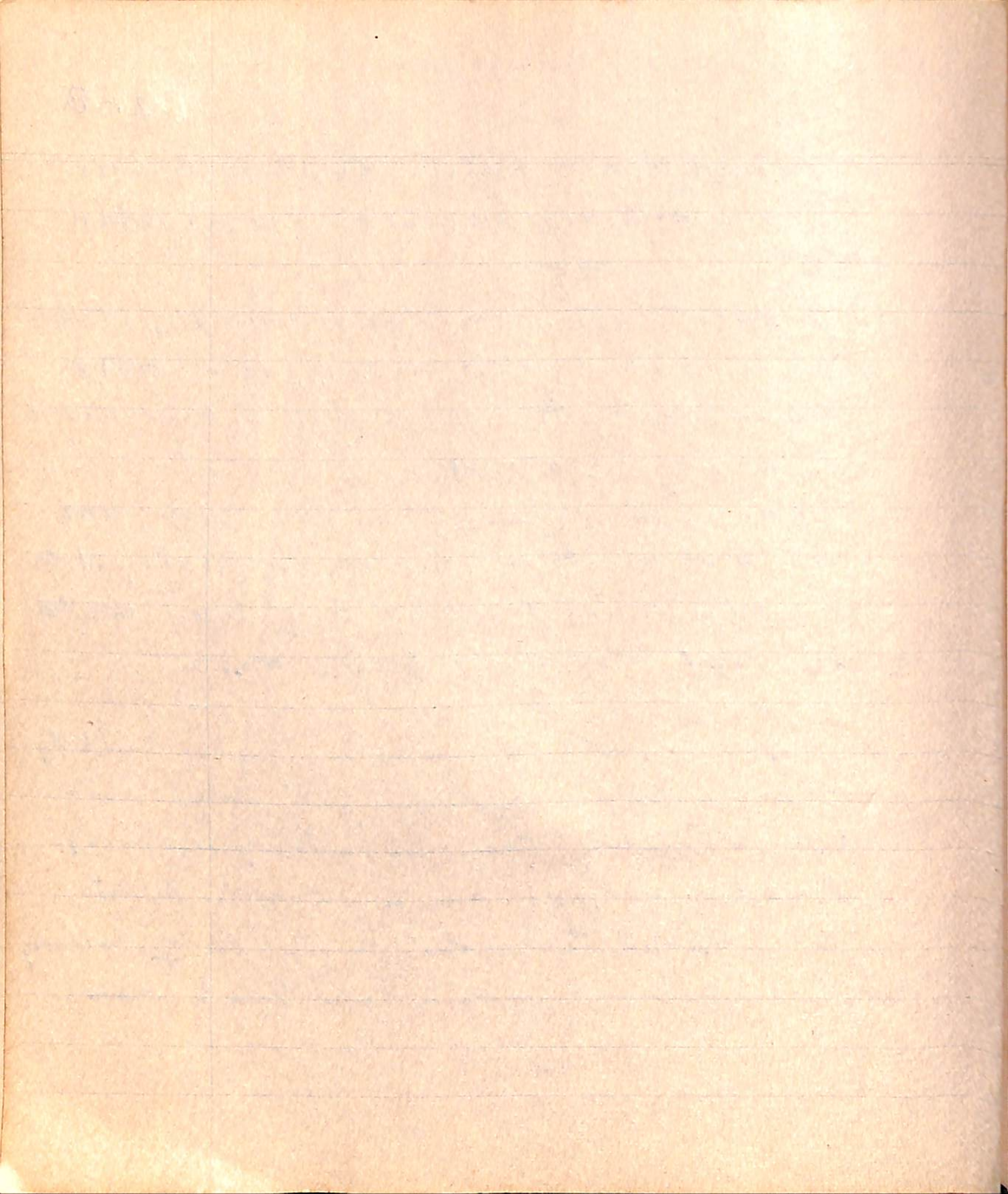
हिन्दी

जिस व्यक्ति में मुक्ति प्राप्त करने का अभिमान है, लेकिन देह पर भी ममता धारण करता है, वह न योगी है और न ज्ञानी है, वह केवल दुःख का ही सामना करेगा।

कश्मीरी

यैमिस मुक्ति प्राप्त करनुक अभिमान आसि, मगर सूती पननि शरीरुच ममताति आसिन त्रावान, नु गव सु ज्ञानी, तु, न गव सु योगी, सु छु केवल कष्टुच्य वति प्यठ कदम थ'वान, ब्रोंठ २ पकान।

A person, who is conscious of his ability to attain salvation and yet does not detach himself from the ~~body~~ bodily pleasures, is neither a Yogi nor a Jñāni, he is only stepping towards the path of misery and destruction, which cause pain to him.



28) भक्तोऽसि चेत् तव एतस्मात् सर्वं आप्नोषि निश्चयात् ।
नोचेत् बहु अपि संप्रोक्तं त्वयि भस्मनि हूयते ॥

हिन्दी

यदि तुम मंगलकामी हो, तो, इतने से ही, तुम्हें सब कुछ प्राप्त होगा। केवल निश्चय, विश्वास और श्रद्धा दिल में धारण करते रहो। नहीं तो, इस से अधिक भी यदि तुम्हें बताया जाए, तो वह सब ऐसा निरर्थ होगा जैसे भस्म में दी हुई आहुति व्यर्थ होगी।

कश्मीरी।

अगर चु सुपात्र आसख, त्ययि च्योन मंज़ विश्वास त श्रद्धा आसि, त्यलि मेलनय सारिय कामनायि पूर्ण। केवल छुय च्योन निश्चयपूर्वक यत्न करुन। वरन ति यि केंछा म्यान वुनमय वुनिस्तान्य, अगर अमि खोतु ति ज़्यादु वनय (लेकिन अगर च्यॉन मंज़ श्रद्धा त निश्चय आसि न) सुति मेलि च्योन क्रोज़लि पोन्य सारनस बराबर।

If you have an unshakeable faith in our instruction, you will attain, all, you desire, because of your firm conviction. Otherwise, Even much preaching, will be of no avail to you. Just like an offering thrown into a mass of ashes.

२२) अपि विज्ञात तत्त्वेन त्वयाऽभ्यस्यं इदं सदा।
न नाममात्रात् कतक-फलं अम्बुप्रसादकम् ॥

हिन्दी

ब्रह्म तत्त्व जानने के पश्चात् भी, तुम्हें इस पर मनन करने का अभ्यास जारी रखना चाहिए। कतक फल के केवल नामोच्चारण करने से ही, जल का मैल दूर नहीं होगा, (जब तक न इस को पानी में डाला जाए और उबाला जाए)।

कश्मीरी

ब्रह्म तत्त्व ज़ानिथ ति, छेय् पज़ी अथ प्यठ पनुन मनन करनुक अभ्यास ~~चलावुन~~ जारी थवुन। मतलब, युथ न अर्जित कुरमुत आत्मज्ञान अनभ्यास किन्य मॅठिथ गछी। कतक-फल-कि केवल नाव ह्यनु सूती, छुनु पोन्य साफ सपदान यूताम न सु पॉनिस मंज़ त्रावोन तु मुकलावोन।

Even after having realised the fundamental principle, you should not refrain from pondering over it or should continue the same practice for long. For, mere uttering the name of a clearing plant, कतक, will not clear away the impurity of water, unless it is ~~was~~ thrown ~~it into it~~ and boiled it into it (water).

23) अहं एव परं ब्रह्म वासुदेवाख्यं अव्ययम् ।
इति स्यात् निश्चयो मुक्तौ, बन्ध एवाऽन्यथा भवेत् ॥

हिन्दी

मैं ही परंब्रह्म हूं, जिस को वासुदेव के अन्य नाम से भी जाना जाता है, जो सदा अव्यय, सनातन तथा अनश्वर है। यही निश्चित ज्ञान मुक्तिप्रद है। नहीं तो, अर्थात् यदि ऐसा दृढ संकल्प तुम्हारे मन में न हो, तो समझ लो, बन्धनों से छुटकारा नहीं होगा।

कश्मीरी

बं'य छुस परंब्रह्म, य्यस छि वासुदेव ति वनान, युस अव्यय, सनातन तु अनश्वर छु। यिमी निश्चयि-सूत्य म्वकलख, नतु छुख संसारस मंज़ फ'सिथ ॥

"I am the Param Brahma, (Supreme Lord), known also by the name of imperishable Vāsudeva," — this unshakeable resolve alone will cause your final liberation, otherwise, bondage will persist.

२४) नेति नेतीति नेतीति शेषितं यत् परं पदम् ।
निराकर्तुं अशक्यत्वात्- तत् ब्रह्मास्मीति सुखी भव ॥

हिन्दी

यह मैं नहीं हूं- यह भी मैं नहीं हूं- और यह भी मैं नहीं हूं- इस प्रकार का तर्कपूर्ण विचार करते हुए, जब तुम, शेष बचे रहे, उस किसी अन्तिम वस्तु पर पहुंच जाओगे, जिसे तुम 'नेति' कह कर नहीं टाल सकोगे, वही वस्तु तुम हो जो ब्रह्म या आत्मा से पृथक् नहीं। यह समझ कर प्रसन्न होकर सुखी हो।

कश्मीरी

यिति छुस न बह- यिति छुस न बह- यिति छुस न बह- यिथ-पाँठ्य तर्क करान करान, यलि च्छ ओरबर नय कुनि चीज़स प्यठ वातान गछिथ ठहरख, यथ च्छ यि हाकख न वँनिथ कि यि छुस नु बह, सुय छुख च्छ युस ब्रह्मस या आत्मास निश्चि अलग छुनु। बाह् समझ यि करथ, मद् बनख शान्त तु सुखी।

I am neither this, nor this, nor this — with this process of reasoning, you will naturally arrive at some final पद (stage), the existence of which, it will be impossible for you to deny; that पद is your own self of the nature of Brahman or Atman with which you are inseparably united. Believe in this and * be happy.

२४) आचक्ष्व शृणु वा तात, नानाशास्त्राण्यनेकशः ।
तथापि न तव स्वास्थ्यं सर्वविस्मरणात् ऋते ॥

हिन्दी ।

हे प्यारे! विविध प्रकार के अध्यात्म शास्त्रों का अध्ययन करो, अथवा उन पर कथा गोष्ठी भी करो, अथवा उनका कथाश्रवण आदि भी सुनते रहो, तो भी तुम्हें स्वास्थ्य अर्थात् 'स्वरूपस्थिति' की अवस्था प्राप्त नहीं होगी, जब तक न तुम, ठीक बूझ के, सब कुछ भूल न डालोगे।

कश्मीरी

हे ताठि! हतिफिर परतु भिन्न शास्त्रन तु वाख्यान, अथवा कथाश्रवण ति करतु तिहन्द, अथवा तिमन प्यठ करतु भाषण गोष्ठी ति, तोति बनी नु च्येह 'स्वास्थ्य' अर्थात 'स्वरूपस्थिति' - हिंज़ अवस्था, यवतान न यि सोरुय ज़गतुक प्रपंच म'शरावख ।

Even though you may preach, or listen to the instructions set forth in various scriptures, yet you will feel groping in the dark for want of peace, unless & until you lose consciousness of all around you.

२६) आत्मानं सततं ब्रह्म विद्धि चैकं निरन्तरम्।
अहं ध्याता परं ध्येयं, अखण्डं खण्ड्यते कथम्॥

हिन्दी

अपने आप को सदा, सिवा ब्रह्म के, और कुछ नहीं जानने का अभ्यास करते रहो। अपने आप को ध्याता का दर्जा देना गलती है। इसी प्रकार ब्रह्म को ध्येय समझ कर मानना भी गलती है। एक ही रूप में अवस्थित इन दोनों को खण्डित कैसे किया जा सकता है?

कश्मीरी

पनुन पान ज़ानुन ब्रह्मरूप; अमी ज़ॉन्य हुन्द गछि चोन सदा अभ्यास करुन; पनुन पान ध्याता मानुन छि गलती अथवा 'ब्रह्म' ध्येय मानुन ति छि गलती। यिक-रूप अखण्डरूपस मंज़ रोज़िथ आसवुनियन बिनन छुन, (ध्याता तु ध्येयस, कथ-पॉठ्य छिन खण्डित वॉठ्य करने?)।

Know thyself as One alone united inseparably with Brahman. Your notion, that you are the Experiencer & the Brahman the object of Experience, cannot hold good or reasonable, simply because of the fact that the Partless Brahman cannot be subjected to partition i.e. partitioned into ध्याता & ध्येय.

२७) सोऽहं चिन्मात्रं एवेति, चिन्तनं ध्यानं उच्यते ।
ध्यानस्याऽविस्मृतिः सम्यक् समाधिः अभिधीयते ॥

हिन्दी

मैं केवल चैतन्य-मात्र हूं — इसी चिन्तन को 'ध्यानं' की संज्ञा से जाना जाता है । जो ध्यान की अविस्मृति है, अर्थात् ध्यान को न भूलना — उसको अभ्यास सदा जारी रखना, उसी को 'समाधि' के नाम से पुकारते हैं ।

कश्मीरी

बुह छि अह छुस, सु अह छुस न 'च्यत्-मात्र' छिका ध्याथ न केंह ति । बुह अमि प्रकार् चिन्तन करन छु, तथ छि वनान 'ध्यानं' । बुह छि 'ध्यान' न मं'श्रावुन छु अर्थात् न'म्युक अभ्यास जारी थवुन छु, तथ छि वनान 'समाधि' ॥

The constant meditation of the formula — 'I am ~~mere~~ चित् and 'चित्' alone, is called Dhyānam. An uninterrupted ~~practice to~~ cultivation of ध्यानं ~~the profound~~ (absorption in the Brahman), is called समाधि ।

२८) ब्रह्माकार-मनोवृत्ति-प्रवाहोऽहंकृतिं विना ।
संप्रज्ञात समाधिः स्यात् ध्यानाभ्यास प्रकर्षितः ॥

हिन्दी

अहंता को त्यागकर, अपनी मनोवृत्तियों के संतत प्रवाह को केवल ब्रह्मरूप सदा समझते रहना — यह जो भाव है, उस को संप्रज्ञात समाधि के नाम से जाना जाता है। यह (समाधि) आत्मज्ञान के अविरत अभ्यास से धीरे धीरे श्रेष्ठता की ओर बढ़ती रहती है।

कश्मीरी

अहंता त्रॉविथ, ~~कुस~~ पननेन मनोवृत्तियन हुंदिस प्रवाहस सदा ब्रह्मरूप मानुनुक, युस भाव छु, तस छि वनान "संप्रज्ञात-समाधि", यिह आत्म-ज्ञानुकि अभ्यास-सूत्य ह्यह वार् वार् थदान त बुनथर लगान।

The flowing stream of mental tendencies, an idea of Brahman alone predominating therein, to the exclusion of Ahantā, is a peculiar state of mind, known as संप्रज्ञात-समाधि, which grows into magnitude with the daily practice of spiritual knowledge.

(२४) कल्पान्तकालमरुतो वान्तु यान्तु चैकत्वं अर्णवाः।
तपन्तु द्वादशादित्याः नास्ति निर्मनसः क्षतिः॥

हिन्दी।

कल्पान्त की वायु बह जाए, सारे समन्दर ~~मिल जाएं~~ / एक होकर मिलकर जाएं; बारह सूर्य / उदित होकर एक ही समय, तप जाएं, परन्तु ब्रह्मभूत ज्ञानी को कोई हानि नहीं हो सकती है।

कश्मीरी

कल्पान्तुक्य वाव वुडयतन, सारी समन्दर इकवट्ट गीलयतन, बाह-वै सिर्य अकीकिरि तापयतन, मगर ब्रह्मस सूतिन, कुनुय बनेमुतिस, ज्ञानी पुरुषस, सपदि नु काँह ति नुकसान।

No harm whatsoever, will befall a spiritually advanced person, who has become One with Brahman, Even if the doomsday storms would blow, or all the oceans mingle together or the twelve suns shine in the sky simultaneously.

२०) या चितिः सर्वभूतानां उदय-व्यय-साक्षिणी ।
तां चितिं पश्य कायस्थां पूर्णानन्द घनामृताम् ॥

हिन्दी

जो चैतन्यदेव, सारे विश्व के संहार और सृष्टि को, साक्षी के रूप में अवस्थित होकर देखता रहता है, उस को, जान लो, कि वही तुम्हारे शरीर में भी व्याप्त करता है। वह पूर्ण, आनन्दघन तथा अमृतमय है ।

कश्मीरी

युस चैतन्यदेव, सारी संसारुक उदय त नाश, अख साक्षी बनिथ वुछान छु, सु ज़ानुन, ज़ि सुय छु यथ चांनिस शरीरस मंज़ ति व्याप्त करान; सु छु पूर्ण, आनन्दघन त, अमृतमय ।

That consciousness, which is the sole witness of the creation & the dessolation of the universe, rests within you also. It is of the nature of 'full', solid bliss ~~and immortality~~ the joy of immortality.

३१) मनोदृश्यं इदं सर्वं यत् किंचित् सचराचरम्।
मनसो ह्युन्मनीभावात् द्वैतं नैवोपलभ्यते ॥

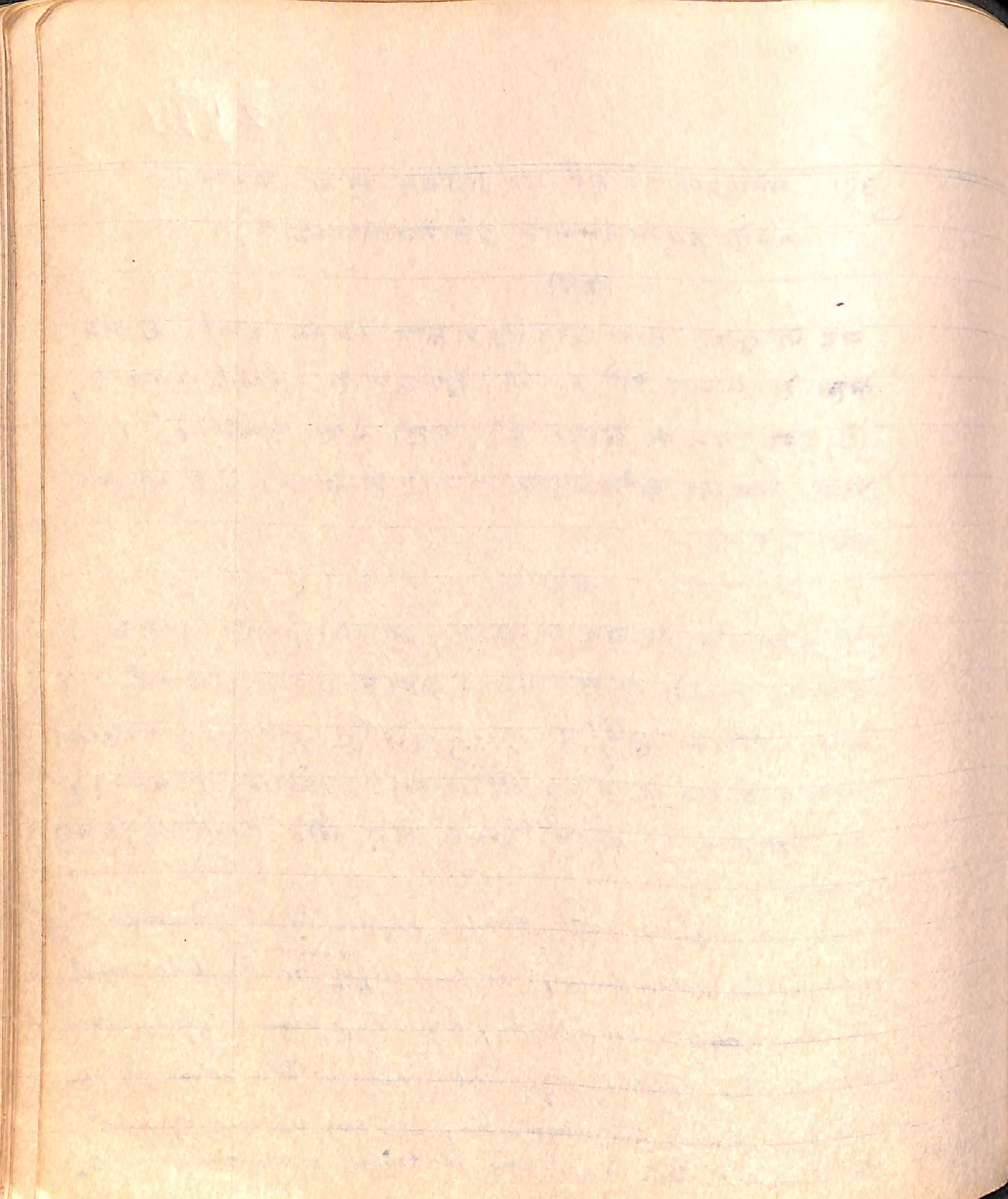
हिन्दी

यह जो कुछ सारा जड़जङ्गमरूप विश्व हमारे सामने, ब्रह्म से अभिन्न होते हुए भी, द्वैतरूप से प्रकाशमान है, उसे, हम, मन के द्वारा ही, ऐसा देख सकते हैं। परन्तु मन को ब्रह्मोन्मुख बनाए जाने पर, द्वैत-भावना नहीं रहेगी।

कश्मीरी

यि केंछा यि चराचर विश्व छु, सु छिन, अ॑स्य मनॖसूती बुझान, ज़ानान तु समझान। ब्रह्मसनाथि सूत्य अद्वैत-रूप आसित ति, छु यि जगत्, छ, अहि ब्रह्म-भिन्न भासान। अम्युक कारण छु मन। यदोय यलि ब्रह्मोन्मुख बनावनु यी, त्यलि छु नु ब्रह्मस त विश्वस मंज़ कांह ति भावना द्वैतच रोज़ान।

It is the mind alone that helps us to understand, this world consisting of moveable and unmoveable creation, as one, quite different from the nature of Brahman. The same, when turned towards the Brahman, serves as our guide, to dispel, this dualistic notion, ~~from our mind.~~ resting within us.



32) यत् अस्पन्दं शिवं शान्तं, यस्यान्तर् जगतः स्थितिः ।
स्पन्दाऽऽस्पन्द-विलासाऽऽत्मा, स एकोऽत्र चिदाकृतिः ॥

हिन्दी

जो अटल, स्थिर, मंगलरूप और शान्त है, जिस के गर्भ में जगत् बीजरूप से अवस्थित है। जड और चेतन रूप में विकसित होना जिस का स्वभाव है। वही एक चिदाकार ब्रह्म सर्वत्र विराजमान है।

कश्मीरी ।

युस अटल तु स्थिर छु; मंगलरूप तु शान्त छु; यँम्य-सँन्दिस उदरस मंज़ यि जगत् छु बीज़रूपवत् रोज़िथ; जड-रूपस तु चेतनरूपस मंज़, विसीर्ण सपदुन, यँम्यसुन्द स्वभाव छु; सुय अख चिदाकार ब्रह्म छु, यति, सारिनुय जायन मंज़, प्रकाशमान रोज़िथ।

There is one Brahman alone of the form of consciousness, who shines forth everywhere. He is unagitated and firm. He is peaceful & of the nature of auspiciousness; within whom rests the world in the form of seed; whose nature is to spread out in animate & in-animate creation.

३३) अहिर्निर्ल्वयिनीं अहिः आत्मतया,
अमहे परिमोक्षणतस्तु पुरा।
परिमुच्य नु तां उरगः स्वबिले,
न निरीक्षत आत्मतया नु पुनः॥

हिंदी

अपने कञ्चुक को त्यागने से पूर्व, सांप, उसे अपने शरीर से एकरूप समझता रहा था। जब कञ्चुक को त्याग दिया, तो, अपने बिल में, उसे देख कर, उस पर, फिर, उसको कोई आत्मीयता की दृष्टि न रही।

कश्मीरी।

क्रुहु क्रावनु ब्रोंठ, ओस हरुफ नथ ज़ानान पनुन स पानस सूत्य कुनुय; यलि तंम्य सु कुँह त्राव, त पत् वुछुन सु, वाग्नि मंज़, हेरि कुन, पत्तर ब्योमुत, क्या पत् कौँह रोज़्या तंग्मिस, अथ ख्यठ, कौँह ममतायि हंज़, कौँह नज़र?

Prior to its casting away, the snake believed his slough as an (inseparable) part of himself. But after having ~~throw~~ cast it away in his hole, did he ever care to look at it, nothing to say of his owning it as a part of his body, as he did previously?

* nor is he prompted to do a deed, ordained by the scriptures for getting merit from it. His knowledge of virtue & vice is ~~not more~~ as limited ~~than~~ as that of a child.

(३४) दोषबुद्ध्योभयातीतो निषेधात् न निवर्तते।
गुणबुद्ध्या च विहितं न करोति यथाऽर्भकः॥

हिन्दी

पाप-पुण्य की ~~भावना~~ दोष भावना से ऊपर उठा हुआ, एक ~~त्रिगुणातीत~~ उभयातीत आत्मज्ञानी, किसी निषिद्ध कर्म के करने से, इसलिए पीछे नहीं हटता, कि ~~मुझे~~ इस के करने में दोष है; अथवा शास्त्र संमत कर्म के करने में इसलिए प्रवृत्त होता है कि इस के करने में पुण्य है। वह एक निर्बोध बालक की तरह दोनों कार्य करता है।

कश्मीरी

पाप-पुण्यच अज्ञान-चिन्ता त्राविथ, युस उभयातीत आत्मज्ञानी आसान छु, कुनि निषिद्ध-कर्मुक करनु निशि छु न सुह, अमि किन्य, पत हटान, ज़ि अमिकिन्य लगिम दोष, या शास्त्र-संमत कर्मस कुन, छु, अमि किन्य, प्रवृत्त सपदान, ज़ि, अमि सूत्य लगिम पुण्य; अज्ञ-बोधुक स्तान छु तमिस ल्युखुय आसान, युस कांह ध्यउरस आसान छु।

Unmindful of the effects of virtue & vice, a ज्ञानी person, does not desist from doing a prohibitive action for fear of bringing pollution to him & [illegible]

(३५) अनुत्कीर्णा यथा स्तम्भे संस्थिता सालभंजिका।
तथा स्थितं जगत् ब्रह्म तेन शून्यं न तत् पदम्॥

हिन्दी

जिस प्रकार एक स्तंभ पर अंकित होने से पूर्व भी, एक पुतली (सालभंजिका) के चित्र की रूपरेखा चित्रकार के मन में मौजूद होती है, उसी प्रकार यह जगत् भी, उस ब्रह्म में, आविर्भूत होने से पूर्व बीजरूप में विद्यमान है। ब्रह्म पद उस जगत्-बीज से खाली नहीं रह सकता।

कश्मीरी

यिथ-पाँठ्य अंकित यमस ब्यठ, चित्रित सपदनु ब्रोंठय, अख खतुजि-हंज़ रूपरेखा (नक्शि) अख खतुज छि, अर्थात् अकि खतुजि-हंज़ रूपरेखा आसान, तिथय-छि, चित्रकार-संदिस मनस मंज़ मूजूदय आसान, तिथय-पाँठ्य, छु, यमि जगतुक नक्शि ति, उत्पन्न सपदनु ब्रोंठय, बीज़रूपकिन्य, ब्रह्म-पदस मंज़ मूजूद आसान; ब्रह्मपद छु कुनि, बिहिथ, जगत्-बीज़, बग़ैर, (खाँली) रूज़िथ।

As prior to its being carved on a pillar, the outline, of a picture doll, is, there already in the mind of an artist-carver, so, is, the picture of the world, before its manifestation, resting in Brahman. Brahma's sphere, cannot remain, without the seed of world.

* which lies in Brahman, in manifested and unmanifested form. The sphere of Brahman cannot subsist without the seed of world.

[signature]
9.8.74

THE END.

[signature] 25.12.73.

३६) सौम्याम्भसि यथा वीचिर्नैवास्ति न च नास्ति च।
तथा मतं जगत् ब्रह्म तेन शून्यं न तत्पदम्॥

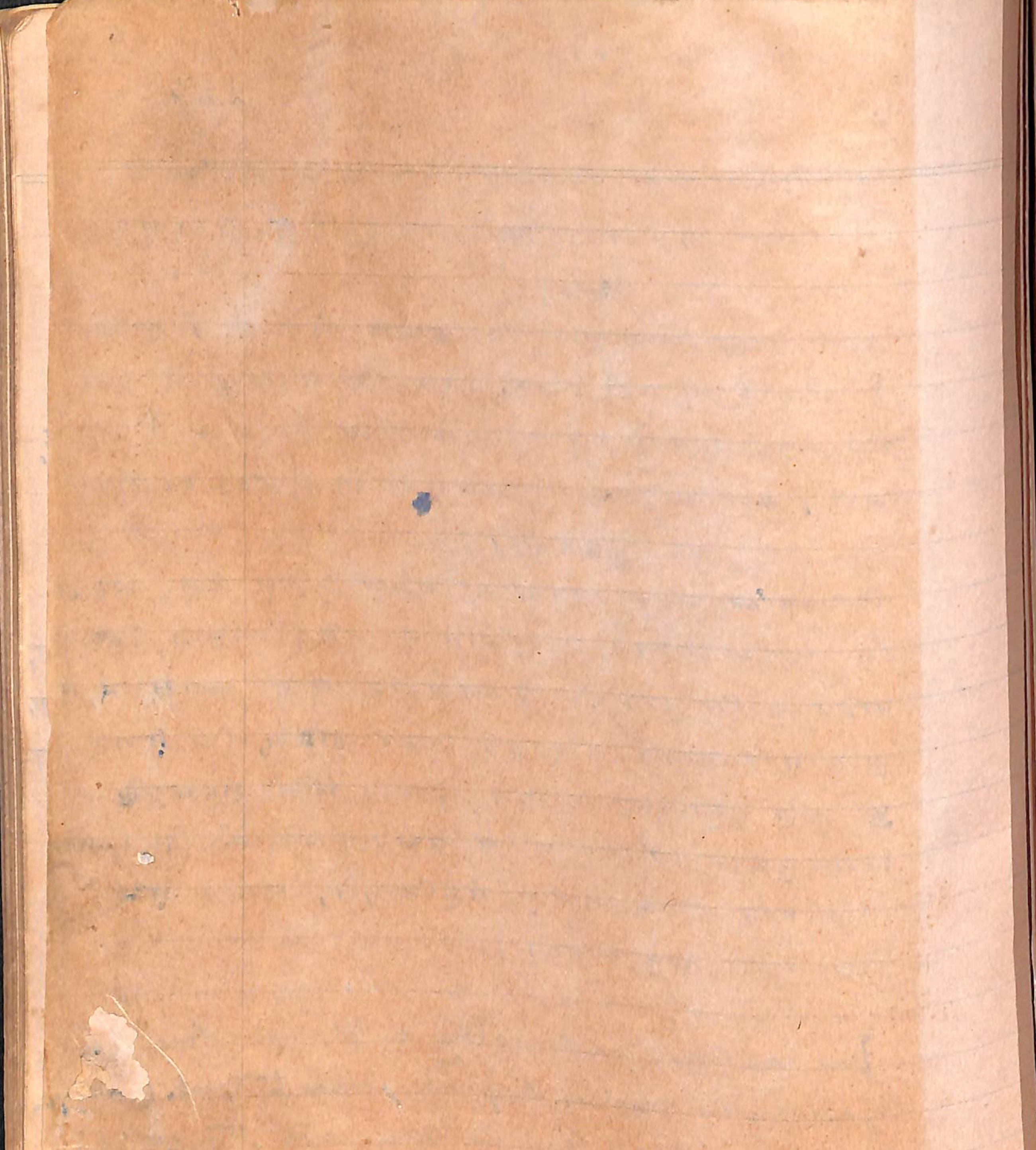
हिन्दी

शान्त- स्वच्छ जलराशि में, जिस प्रकार, तरंगों का अस्तित्व है और है भी नहीं। उसी प्रकार, शान्त ब्रह्म में, प्रकट और अप्रकट रूप से, जगत् का अस्तित्व है और है भी नहीं। ब्रह्म का प्रतिष्ठान जगत् से खाली नहीं रहता।

कश्मीरी

यिथ-पाँठ्य ऑकिस शान्त तु निर्मल ज़लस मंज़, मलरव छि मूजूद आसान तु छिति नु मूजूद आसान, तिथय पाँठ्य छु यि ज़गत् ति शान्त ब्रह्मस मंज़ आसान, तु छुति नु आसान। बाहरदृष्टि किन्य वुछिथ, यि ज़गत् छु अति ब्रह्म-भिन्न आसान, लेकिन यदि सूक्ष्मदृष्टि-किन्य वुछोन, यदि छु नु यि ब्रह्म-रूप और केंह ति. यिथ-पाँठ्य, पानि निशि अलग, नज़रि मंज़ यिथ, ति, मलरव ज़ल-निशि अलग छिनु आसान।

Just as, there, on a calm + placid sheet of water, the ripples, do + do not seem to exist, (all the ~~they do exist there~~). So is the case with the world.



ऽऽ ।ऽऽ ।।ऽ ।ऽऽ

2. प प्रच्छ तं मृदुमन्द हासिनीम्

वियोग

भद्रे ! कथं कुत्र ... नया:

... कवि: कुराग: दिदीट:

भद्रे खचैत्र: कुशमि:

